पेपर - (IInd)
भाग - 'क'

Question:- शीत युद्ध क्या है ? इसके प्रमुख कारण व चरणों का वर्णन करो।

Answer:-
War (युद्ध) :- दो सेनाओं के सशस्त्र संघर्ष को War कहते हैं।

युद्धोत्तर काल में उत्पन्न हुए सामान्यतः तनाव विशेषतया अमेरिका तथा सोवियत संघ के बीच के तनाव की सामूहिक रूप को शीत युद्ध का नाम दिया गया।
दूसरे विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद दोनों महाशक्तियों में अविश्वास की धारणा उत्पन्न हुई उसी अविश्वास की धारणा ने शीत युद्ध को जन्म दिया।

Cold War से तात्पर्य :- युद्ध ना होकर युद्ध की जैसी स्थितियाँ लगातार बनी रहीं उसे शीत युद्ध कहा जाता है जिसमें एक - दूसरे के प्रति राजनीतिक अविश्वास, जासूसी, षड़यंत्र, आलोचना, संघर्ष बना रहता है। अर्थात् स्थिति सामान्य नहीं रह पाती है।

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में दो विरोधी शक्तियों ने इस युद्ध को जन्म दिया। पहला अमेरिका (USA) दूसरा USSR (यूनियन (Union) of Sovite Soslist Republic) (सोवियत संघ)
* शीत युद्ध को Proxy war भी कहा जाता है अर्थात् शीत युद्ध महाशक्तियों के मध्य ना होकर उनके Proxy (अनुयायी) के मध्य हुआ था।

शीत युद्ध शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग अमेरिकी राजनेता बर्नार्ड बारूच ने किया था।

(1933) USA – USSR 1922 निर्माण
क्यों
अपनी महाशक्ति बनी रहे या

परन्तु इसे लोकप्रिय वाल्टर लिपमैन ने बनाया था।

शीत युद्ध शब्द सोवियत संघ एवं अमेरिका के तनाव पूर्ण सम्बन्धों को बताने के लिए प्रयोग में लाया गया।

शीत युद्ध की प्रकृति :-

(i) शीत युद्ध में युद्ध की तरह तनाव और विरोध तो विद्यमान होते हैं परन्तु युद्ध से दूर रहने का प्रयास किया जाता है।

(ii) प्रत्येक राष्ट्र अपनी शक्ति और प्रभाव का विस्तार करना चाहता है।

(iii) शीत युद्ध में सम्बन्ध तनावपूर्ण व सिमित होते थे।

(iv) शीत युद्ध में राजनैतिक अविश्वास, जासूसी रहती थी।

(v) उसमें शस्त्रदौड़ से बाजार गर्म रहता था।

शीत युद्ध के कारण :

(i) परस्पर विरोधी विचारधारा

शीत युद्ध का प्रमुख एवं मुख्य कारण विरोधी विचारधारा को माना जाता है। यह विचारधारा और साम्यवादी विचारधारा है। पूंजीवादी विचारधारा का नेता अमेरिका USA तथा साम्यवादी का नेता सोवियत संघ (USSR) था। शीत युद्ध की वास्तविक शुरुआत 1917 से मानी जाती है जब रूस में लेनिन के नेतृत्व में बॉल्शेविक क्रांति हुई और अमेरिका द्वारा उस क्रांति का विरोध किया गया।

ये दोनों विचारधाराए एक - दूसरे को समाप्त करने पर बल देती है तथा शोषण का स्वरूप बताती है

(iii) परस्पर अविश्वास तथा भय :-

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद में इन दोनों महाशक्तियों में भय और अविश्वास प्रारम्भ हुआ तथा मतभेद शुरू हुए दोनों ने एक - दूसरे की आलोचना करना जारी रखा।

(iiii) चर्चिल का फुल्टन भाषण :-

5 मार्च 1946 को अपने लोकप्रिय फुल्टन भाषण में ब्रिटेन के प्रधानमंत्री चर्चिल ने साम्यवादी खतरे के प्रति आगाह किया। आयरन Curtain (लोहे का आवरण) की धारणा प्रस्तुत की अर्थात् उन्होंने बताया कि स्टैनिन क्षेत्र से लेकर एड्रियाई तक एक ऐसा लोहे का आवरण छा गया है जिसके दूसरे हिस्सों को देखा नहीं जा सकता है।

USSR शासक - स्टालिन

(iv) Mr. X का सिद्धान्त :-

केनन

जॉर्ज F. ~~कैनेडी~~ जो कि सोवियत संघ में अमेरिका का राजदूत थे जिन्होंने साम्यवादी खतरे के प्रति अमेरिका का आगाह करने के लिए एक Telegram (तार - पत्र) लिखा।

(v) अमेरिका की अलगाववाद की नीति का अंत :-

तत्कालीन सुधारतत्वों एवं अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में अपनी भूमिका को मजबूत करने के लिए उसने अपनी अलगाववादी नीति का अन्त किया और अन्तर्राष्ट्रीय मामलों मे सक्रिय हुआ।

Nato - North Antlantic Trity Organisation

(vi) सोवियत संघ का बढ़ता विस्तार :-

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद सोवियत संघ अपना विस्तार बढ़ा रहा था वह उन देशों में साम्यवादी क्रांति करता और उन्हें अपने गुट में शामिल करता।

17/09/22

शीत युद्ध के चरण :-

1. प्रथम चरण 1945 - 1961 कठोर
2. द्वितीय चरण 1961 - 1979
3. तृतीय चरण 1979 - 1985
4. चतुर्थ चरण 1985 - 1991

1. प्रथम चरण (1945 - 1961) कठोर शीत युद्ध :-

(i) True Man सिद्धान्त :- Mr. X के पत्र के बाद अमेरिका ने सोवियत संघ के विस्तार को रोकने के लिए ट्रू मैन सिद्धान्त दिया। यूनान, टर्की, ईरान आदि देशों को साम्यवादी खेमे में जाने से रोकने के लिए उन देशों को आर्थिक सहायता दी गई।

(ii) मार्शल योजना :- True man सिद्धान्त को विकसित रूप देने के लिए मार्शल योजना चलाई गई यह योजना पूरे यूरोप महाद्वीप के लिए थी। इसकी सहमति 1947 में बनी परन्तु लागू 1948 में हुई।

USSR ने अमेरिका की इन योजनाओं के विरोध में "मोलोतोव योजना" चलाई।

(margin: यूरोपियन पुनर्निर्माण / आर्थिक)

(iii) बर्लिन का विभाजन :- (margin: 1949 विभाजित)

बर्लिन जर्मनी की राजधानी थी। USSR द्वारा बर्लिन की नाकाबंदी

पू. जर्मनी — USA; प. जर्मनी — USSR; बर्लिन लाइन

फिदेल कास्त्रो - क्यूबा   जॉन F. कैनेडी - USA
निकिता ख्रुश्चेव - USSR

की गई थी। इस घटना ने शीत युद्ध को आमने-सामने ला दिया।

(iv) सैनिक संगठनों का निर्माण :-
अमेरिका ने अपने गुट को मजबूत करने के लिए एवं सुरक्षा करने के लिए नाटो
Nato - North Atlantic Treaty Organization
नॉर्थ अटलांटिक ट्रिटी ऑर्गनाइजेशन की स्थापना 1949 को हुई। वर्तमान सदस्य 30 हैं। USSR ने भी अपने सैनिक संगठन का निर्माण किया जिसे वारसा पैक्ट के नाम से जाना जाता है। इसकी स्थापना 1955 में हुई। 6 देश।

(v) कोरिया संकट (1950)
विचारधारा के आधार पर कोरिया दो भागों में बँट गया था उत्तरी कोरिया व दक्षिणी कोरिया।
उत्तरी कोरिया USSR से प्रभावित है। दक्षिणी कोरिया पूंजीवादी विचारधारा से प्रभावित है। दक्षिणी कोरिया पर आक्रमण कर दिया गया जिससे कोरिया संकट की शुरुआत हुई। UNO के माध्यम से 1953 में इस युद्ध को समाप्त करवाया।

10/01/22
1961 अमेरिका ने बेआफ पिग्स आक्रमण योजना बनाई असफल
(vi) क्यूबा मिसाइल संकट :- शीतयुद्ध का चरम बिन्दु
1961
1961 में USSR को चिंता हुई कि अमेरिका द्वारा शासित क्यूबा पर आक्रमण कर देगा व राष्ट्रपति फिदेल कास्त्रो (क्यूबा के) का तख्तापलट हो जाएगा USSR क्यूबा को कूटनयिक व वित्तिय सहायता देता था नीकिता ख्रुश्चेव ने क्यूबा को रूस के सैनिक अड्डे में बदल दिया। 1962 में मिसाइल (परमाणु बम) तैनात कर दी और इस की खबर 3 weeks बाद USA को लगी जिससे वह

सीधा सम्पर्क - हॉट लाइन

घबरा गया। जॉन F. कैनेडी घबरा गया और आदेश दिया कि अमेरिकी जंगी बेड़ों को आगे करके क्यूबा की तरफ जाने वाली USSR की जहाजों को रोका जाए।

2. द्वितीय चरण 1961 - 1979 (देतान्त का समय) 1961 के क्यूबा मिसाइल संकट के बाद अमेरिका और USSR के सम्बन्धों में परिवर्तन आया जहाँ महाशक्तियाँ पहले एक-दूसरे से युद्ध के लिए तैयार रहती थी, वहीं महाशक्तियाँ अब शान्ति व सहयोग की बात करती है। 1962 से 1979 के काल को देतान्त का समय कहा जाता है।

देतान्त से तात्पर्य - यह है कि युद्ध न करके शान्ति एवं समझौता किया जाए।

इस चरण में निम्नलिखित घटनाएँ घटी -

(i) अमेरिका और सोवियत सम्बन्धों में परिवर्तन :-

अब दोनों महाशक्तियाँ युद्ध न करके शान्ति की बात करती है। क्यूबा मिसाइल संकट ने यह महसूस करा दिया कि युद्ध से किसी को भी फ़ायदा नहीं होगा अतः दोनों के सम्बन्ध में परिवर्तन आया।

(ii) सम्मेलन एवं समझौते :-

देतान्त के दौरान दोनों महाशक्तियों के प्रतिनिधि एवं नेता आपस में मिलने लगे। जिससे समझौते एवं सम्मेलनों में वृद्धि हुई।

(A) 1963 का हॉटलाइन समझौता :-

दोनों महाशक्तियों के नेताओं से सीधा सम्पर्क।

(B) PTBT - 1963 'व्यापक प्रतिबन्ध परिक्षण संधि',
इस सन्धि में यह तय किया गया कि कोई भी देश महासागर, अन्तरिक्ष या धरती पर परमाणु परीक्षण नहीं करेगा।
यह सन्धि सर्वप्रथम 1963 में USSR, USA, फ्रांस, ब्रिटेन व इटली के मध्य की गई साथ ही परमाणु बम से सम्बन्धित एकमात्र सन्धि है जिस पर भारत ने भी हस्ताक्षर (नेहरू) किए।

लागू 1970

(C) NPT - 1968 :- 'परमाणु अप्रसार सन्धि'
इस सन्धि में यह कहा गया कि 1967 से पहले जिन देशों ने परमाणु हथियार बना लिए वो देश ही परमाणु हथियार रखेंगे तथा अन्य देश परमाणु हथियार नहीं रखेंगे। परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्र अपनी परमाणु तकनीक किसी अन्य देश को हस्तान्तरित नहीं करेंगे।
भारत का मत - इस सन्धि पर भारत ने आज तक हस्ताक्षर नहीं किए क्योंकि भारत ने इस सन्धि को भेदभावपूर्ण कहा क्योंकि महाशक्तियों ने पहले ही परमाणु बम का आविष्कार कर लिया और अन्य देशों को पाने से रोकते हैं या तो ये देश अपने परमाणु हथियारों को समाप्त करे या फिर अन्य देशों को भी यह तकनीकी प्रदान करे।

3. तृतीय चरण 1979-1985 (New Cold War)

1979 में अफ़गानिस्तान में रूस के सैन्य हस्तक्षेप से नवशीत युद्ध की शुरुआत हुई। नवशीतयुद्ध शब्द ऐन्थैनी 'एथॉनी गिडिन्स' ने दिया।

नवशीतयुद्ध से तात्पर्य - दोनों महाशक्तियाँ देतान्त, शान्ति, समझौतों को छोड़कर एक-दूसरे के दुश्मन फिर से बन गये अर्थात् दोनों महाशक्तियों में तनाव की स्थिति फिर से आ गई। जिसे नवशीतयुद्ध कहा गया।

नवशीतयुद्ध के कारण व प्रमुख घटनाए :-

(i) अफगान संकट 1970 के दशक से पहले यहाँ पर राजतंत्र विद्यमान था परन्तु 1972 में साम्यवादी सरकार की स्थापना हुई। तथा इसके बाद 1979 में अफ़गानिस्तान में साम्यवादी सरकार का तख्तापलट हो गया और वहाँ पर पूंजीवादी सरकार स्थापित हो गई। इसके विरोध में USSR ने अफ़गानिस्तान में सैन्य हस्तक्षेप किया और इस हस्तक्षेप को रोकने के लिए USA भी अफ़. आ पहुंचा और दोनों महाशक्तियाँ आमने-सामने आ गयी जिससे नवशीत युद्ध की शुरुआत हो गई।

(ii) ईरान की इस्लामिक क्रान्ति :-

1979 में ईरान के अल्लाह-तुल्लाह खुमैनी के नेतृत्व में इस्लामिक क्रांति हुई जिसमें इस्लाम के सम्पूर्ण रीति-रिवाजो को लागू करने का प्रयास किया गया जिसमें महिलाओं को गुलामी की दलदल में फिर से धकेल दिया।

अल्लाह तुला खुमैनी
USSR -1957 मे स्पुतनिक 2 का प्रक्षेपण
1958 USA ने एक्सप्लोरर 2

(iii) स्टार वॉर Star War Programme :-

तत्कालिन समय में अमेरिका के राष्ट्रपति रॉनाल्ड रीगन बने जो एक Scienctist थे, जिन्होंने अन्तरिक्ष में युद्ध की शुरूआत की इनके विपक्ष में USSR ने भी अन्तरिक्ष में अपनी सेनाए स्थापित करने का प्रयास किया इससे दोनों महाशक्तियाँ आमने - सामने आ गई।

4. चतुर्थ चरण (1985-1991) अंतिम चरण :-

शीत युद्ध का यह चरण 1985 में सोवियत संघ में मिखाइल गोरबाचोव के राष्ट्रपति बनने के साथ ही आरम्भ हुआ तथा सोवियत संघ के विघटन तक चला और अन्तरष्ट्रीय स्तर पर अफगानिस्तान से पीछा छुडाने के लिए साम्यवादी सरकार के आर्थिक व राजनीतिक सुधार आए

सोवियत संघ के दो सुधार थे जिनकी आरम्भ मिखाइल गोरबाचोव ने किया था जो निम्न रूप से है —

(i) परस्ट्रोईका :-

सोवियत संघ के दौरान सोवियत अर्थव्यवस्था भारी वित्तिय संकट के दौर से गुजर रही थी। 1980 के दशक में कृषि उत्पादन में कमी के कारण सुधार के लिए बाध्य होना पड़ा और इसे ही परस्ट्रोईका व ग्लासनॉट नाम दिया।

परस्ट्रोईका का अर्थ —

आर्थिक सुधारो का पुनः निर्माण। इसके अंतगर्त साम्यवादी दल का एकाधिकार समाप्त कर दिया गया। देश की संसद का चूनाव बहुदलीय प्रणाली के आधार पर करने का प्रावधान किया गया सभी सरकारी संस्थाओं को अपने उत्पादन खुले बाज़ार

फूकूयामा फ्रांसीसी ने पूंजीवादी व्यवस्था को सार्वभौम माना

में बेचने का अधिकार दिया गया तथा विदेशी को भी USSR की कम्पनियों को खरीदने के अधिकार दे दिए।

ग्लास्नॉट का अर्थ - राजनीतिक सुधार।
विचार अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, समाचार तथा मीडिया पर सरकारी नियंत्रण में ढीला तथा प्रकाशन आदि से सेंसरशिप की समाप्ती हुई।

(ii) पूर्वी यूरोप की क्रांति
1989 में USSR में पहली बार बहुदलीय प्रणाली के आधार पर चुनाव हुए जिसमें मीडिया ने मुक्त रूप से वाद-विवाद ने सक्रिय भूमिका निभाई। वहीं पूर्वी यूरोप के देशों में सक्रिय आन्दोलन को प्रोत्साहन मिला उसके परिणाम से पूर्वी यूरोप में सत्ता का परिवर्तन भी हुआ जिसे पौलैंड कहा जाता है।
1989 में पॉलैण्ड में 42 वर्षों बाद पहली गैर साम्यवादी सरकार बनी। हंगरी ने आस्ट्रिया से सीमापार प्रतिबन्धों को भी समाप्त कर दिया।

→ बुल्गारिया व रोमानिया की भी सरकार गिर गई।
→ 3 Oct. 1990 में पूर्वी जर्मनी भी प. जर्मनी का भाग बन गई।

(iii) अन्तर्राष्ट्रीय समझौता :-
जहाँ रूस में ग्लास्नॉट और पेरेस्त्रोइका (पुनर्रचना) का संचालन हो रहा था वहीं 1986 में रेकजाविक में हुए शिखर सम्मेलन में रूस तथा अमेरिका ने अगले 5 वर्षों में अपनी 50% सेना को खत्म करने का निर्णय

लिया। अगले 10 वर्षों में भारी बैलास्टिक मिसाइलों को खत्म करने का निर्णय लिया।

→ 1987 में दोनों महाशक्तियों ने International Range Nuclear force treaty पर हस्ताक्षर किए जिसमें युद्ध क्षेत्र से सम्बन्धित परमाणु यंत्रों तथा यूरोपिय GLMC को समाप्त करने का निर्णय लिया।

मिखाइल गोर्बाचोव और अमेरिका के राष्ट्रपति जॉर्ज बुश ने परमाणु साधनों को लेकर संधि हुई जिसमें 10 हजार वाहनों से घटाकर 600 वाहनों की अनुमति दी गई।

शीत युद्ध की समाप्ति :-

December, 1992 में अमेरिका व USSR के सर्वोच्च नेताओं के द्वारा माल्टा शिखर सम्मेलन में मिलना तथा शीत युद्ध को अधिकारिक रूप से अन्त करने की घोषणा की।

इस चरण की प्रमुख घटनाएँ USSR का विघटन करते हुए दर्शायी गयी है —

(i) यूरोप तथा केन्द्रीय एशिया के विभिन्न देशों की सीमाओं में परिवर्तन।
(ii) 24 नये राज्यों की स्थापना।
(iii) पूर्वी यूरोप के साम्यवादी देशों की क्रान्तियाँ
(iv) साम्यवादी शासन का अंत
(v) बर्लिन की दिवार का गिरना
(vi) पूर्वी जर्मनी का पश्चिमी जर्मनी में विलय
(vii) सोवियत संघ का विघटन

शीत युद्ध का अंत :-

1989-90 में शीत युद्ध के मूल कारणों की समाप्ति हो गई। USA व USSR दोनों समझ गए कि विश्व के अधिकतर देश शान्ति ही चाहते है और यदि वे दोनों महाशक्तियों में से किसी एक गुट में सम्मिलित है।

→ अफ़गानिस्तान से सोवियत संघ सेनाए हटा ली गई और वारसपैक्ट भी समाप्त कर दिया।

→ 1990 तक सोवियत संघ ने शीत युद्ध की राजनीति का परित्याग कर दिया क्योंकि उस समय तक पूर्वी यूरोप में साम्यवादी सरकारों का पतन हो चुका था।

→ 1991 में USSR का विघटन हो गया व मिखाइल गोर्बाचोव के काल में शीत युद्ध समाप्त हो गया।

शीत युद्ध का प्रभाव :-

विश्व राजनीति शीत-युद्ध ने अत्यधिक प्रभावित किया है, उसमें विश्व में भय और आतंक के वातावरण को जन्म दिया जिससे शस्त्रों की होड़ बढ़ी।

→ शीत युद्ध ने USA जैसी संस्था को पंगु बना दिया और विश्व को दो गुटो में विभाजित कर दिया।

* शीत युद्ध के प्रभाव निम्न रूप से देखा जा सकता है —

(i) विश्व का दो गुटों में विभाजन :-

शीत युद्ध के कारण विश्व राजनीति का स्वरूप द्विध्रुवीय बन

गया। USA व USSR दोनों महाशक्तियां प्रमुख रूप से गुटों के रूप में उभर कर सामने आई। USA ने Nato जैसे गुट का तथा USSR ने वारसा जैसे गुट का निर्माण किया।

(ii) आणविक युद्ध की सम्भावना का भयः-

1945 में आण्विक शस्त्रों का प्रयोग किया गया था। शीत युद्ध के वातावरण में यह महसूस किया जाने लगा कि ~~अगला~~ आगे युद्ध भयंकर आण्विक युद्ध की सम्भावना होगी ऐसी स्थिति क्यूबा के समय बनी।

(iii) UNO को पंगु करना :- USA + USSR

शीत युद्ध के कारण UNO जैसी विश्व संगठन के कार्यों में भी अवरोध उत्पन्न हुआ। महाशक्तियों के परम्परा विरोधी दृष्टिकोण के कारण संघ कोई कठोर कार्यवाही नहीं कर सका। UNO का मंच महाशक्तियों की राजनीति का एक अखाड़ा बन कर रह गया।

(iv) मानविय कल्याण के कार्यक्रमों की उपेक्षाः-

शीत युद्ध के कारण विश्व राजनीति का केन्द्रिय बिन्दु सुरक्षा की समस्या तक ही सीमित रह गया और मानव कल्याण से सम्बन्धित कई महत्वपूर्ण कार्यों का स्वरूप बिगड़ गया।

निष्कर्ष :-

Page No. ____ Date 23|09|22

[सोवियत संघ का विघटन]

शीत युद्ध के बाद 1991 में कई कारणों से सोवियत संघ का विघटन हो गया जिनसे शीत युद्ध की समाप्ति को चिह्नित किया क्योंकि दो महाशक्तियों में से एक कमजोर पड़ गया था।

* USSR के पूर्व राष्ट्रपति मिखाइल गोर्बाचेव को Cold War को समाप्त करने में उनकी भूमिका के लिए 1990 में नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

USSR के विघटन के प्रमुख कारण :-

① गोर्बाचेव की नीतियाँ :- गोर्बाचेव ने USSR को राजनीतिक और आर्थिक अस्थिरता से बाहर निकलने के लिए दो पहलों की शुरुआत की। इन नीतियों को USSR के विघटन के प्रमुख कारणों में से एक माना है।

(i) ग्लास्नोस्त (खुलेपन की नीति)
(ii) पेरेस्त्रोइका (पुनर्रचना)

इन दोनों नीतियों के आर्थिक व राजनीतिक सुधार शुरू किए

② अमेरिका के साथ हथियारों की होड़ पर रोक लगाई।

③ USSR में कम्युनिस्ट पार्टी की निरंकुश शासन।

② एक दल का प्रभुत्व :-

USSR में एक ही दल कम्युनिस्ट पार्टी का वर्चस्व था। USSR की जनता की इच्छा को पूरा करने में असमर्थ थी कम्युनिस्ट पार्टी व अन्य गणराज्य के समूह में रूस का प्रभुत्व को देखकर जनता शोषित महसूस करने लगी।

③ साम्यवादी व्यवस्था का सत्तावादी होना :-

समाजवादी में जनता के अधिकार समाप्त कर दिए गए। निजी सम्पत्ति समाप्त कर दी गई और सारे अधिकार सरकार के पास आ गए सरकार जनता पर अपने निर्णयों को थोपने लगी इससे वह सत्तावादी हो गई। जनता में असंतोष बढ़ गया।

④ संसाधनों का प्रयोग सही न होना :-

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद लोगों का मानना है कि रूस का पूर्वी यूरोप पर प्रभुत्व हो गया था तो उन देशों पर अपना प्रभाव बनाए रखने के लिए उसने धन का खर्चा अधिक किया और शस्त्रों पर खर्चा करने के कारण लोगों में की आकांक्षा पूरी न हो सकी।

⑤ पश्चिमी देशों की तुलना में सोवियत संघ का पिछड़ना :-

शीत युद्ध के दौरान यूरोप को दो भागों में बाँट बँट गया, यहां पर पूंजीवादी व्यवस्था विकसित हुई और तेजी से जनता की आवश्यकताएं व आकांक्षाएं पूर्ण हुई व देश का आर्थिक विकास हुआ जबकि रूस पिछड़ता ही गया और उसकी अर्थव्यवस्था डगमगा गई परिणामस्वरूप वहाँ की जनता पूंजीवाद की तरफ आकर्षित हुई।

(6) विचार व अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का न होना:- USSR के विघटन का एक कारण यह भी रहा है कि यहाँ लोकतंत्र का अभाव व जनता को अपने विचार व अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता नहीं थी।
जिस देश में जनता को खुल कर अपने विचार देने का अधिकार ना हो तो उस देश की जनता एकना एक दिन तो सरकार से परेशान होकर बगावत तो करेगी ही ना। जैसे USSR की जनता ने किया इस प्रकार विश्व में सबसे बड़े क्षेत्रफल वाला देश का 1991 में विघटन हो गया।

सोवियत संघ के विघटन के बाद के प्रभाव

- → लोकतंत्र की सर्वव्यापकता
- → शीत युद्ध का अन्त
- → एक ध्रुवीय विश्व
- → रूस की भूमिका में परिवर्तन
- → परमाणु हथियारों सम्बन्धी चिंता
- → साम्यवाद का पराभव
- → विचारधाराओं के आधार पर राष्ट्रों का विभाजन अप्रासंगिक

(i) शीत युद्ध का अन्त:- साम्यवादी खेमे के विघटन ने शीत युद्ध को समाप्त कर दिया और तनाव रहित नई विश्व व्यवस्था का उदय हुआ जैसे यूरोप में लगभग आधी शताब्दी बाद शांति की स्थापना की है।

(ii) एक ध्रुवीय विश्व:- साम्यवादी गुट के बिखराव के बाद अमरीका विश्व की एकमात्र महाशक्ति रही। इसकी कोई देश बराबरी नहीं कर सकता था

उसके पास शस्त्रों की व परमाणु अस्त्रों के अलावा आर्थिक क्षमता भी अधिक थी।

(iii) रूस की भूमिका में परिवर्तन :-

साम्यवादी गुट के बिखराव से रूस का अन्तर्राष्ट्रीय वजन कम हुआ उसकी महाशक्ति की पदवी का पराभव हुआ। इसने रूस की बीमार व जर्जर होती अर्थव्यवस्था को उजागर कर दिया।

(iv) साम्यवाद का पराभव :-

साम्यवादी गुट के बिखराव से साम्यवाद का पराभव प्रारम्भ हुआ उसने लोकतांत्रिक केन्द्रीकरण, सर्वहारा वर्ग के अधिनायकवाद व अन्तर्राष्ट्रीय समाजवाद के सिद्धान्तो को दफनाया है। इसने यूरोप की साम्यवादी पार्टियों को समाजवादी पार्टियां और पीपुल्स डेमोक्रेसी को डेमोक्रेसी में बदलदिया

<u>निष्कर्ष</u> :-

USSR का विघटन 15 गणराज्यों में विघटित हुआ। साम्यवादी विचारधारा को लोग नापसंद करने लगे क्योंकि यह जनता की इच्छा को पूरी न कर सकी। अतः सभी लोग पूंजीवादी व्यवस्था की ओर आकर्षित होने लगे।

अंत मे 1991 में जनता कम्युनिस्ट पार्टी व सरकार के से परेशान होकर USSR का विघटन किया गया

NAM

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन से क्या तात्पर्य है वर्तमान समय में इसकी प्रासंगिकता को समझाइए।
या असंलग्नता के प्रमुख तत्वों का वर्णन करो।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में एक महत्वपूर्ण दौर आया, जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति और अधिक सक्रिय हो गई अर्थात् शीत युद्ध व गुटनिरपेक्ष आन्दोलन ने राजनीति को तेज कर दिया।

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन कोई संयोगवश होने वाली घटना नहीं थी बल्कि यह तो एक सोची-समझी एक साजिश थी अर्थात् गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों नेमें अपने विवेक के आधार पर उस आन्दोलन को जन्म दिया
प्रारम्भ में(1961) जहाँ उसके सदस्यों की संख्या 25 थी वर्तमान में अब 120 हो गई है जो कि उस आन्दोलन की सफलता को व्यक्त करती है।

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन का उदय :-

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में महत्वपूर्ण परिवर्तन आये। सम्पूर्ण संसार दो भागों में बँट गया। एक भाग पूंजीवादी गुट कहलाया तथा दूसरा गुट साम्यवादी कहलाया। उसी समय साम्राज्यवाद व उपनिवेशवाद से मुक्त होकर एशिया, अफ्रीका व लैटिन अमेरिका के राष्ट्र स्वतंत्र हो रहे थे। इन राष्ट्रों के सामने मुख्य समस्या यह थी कि वे किस गुट में शामिल हो।
अतः इन राष्ट्रोंनेमें किसी भी गुट में ना जाकर

अपना स्वतंत्र अस्तित्व स्थापित किया उसी स्वतंत्र अस्तित्व को गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के 'नाम से जाना गया।

'गुटनिरपेक्ष' अर्थ व परिभाषा :-

गुटनिरपेक्ष एक नीति, विचारधारा व एक परिभाषा के रूप में व्यक्त हुआ है। सामान्यतया गुटनिरपेक्ष / गुटनिरपेक्षता का अर्थ है कि किसी भी गुट में शामिल नहीं होना और अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाये रखना।

आन्दोलन :-

विभिन्न लोगों द्वारा अपनी मांगों को लेकर हिंसक व अहिंसक तरिके से सक्रीय भूमिका अदा की जाती है वह आन्दोलन कहलाता है।

गुटनिरपेक्ष एक आन्दोलन :-

जिस प्रकार आन्दोलन में लोग अपनी मांगों को लेकर सक्रीय भूमिका निभाते हैं उसी प्रकार गुटनिरपेक्ष राष्ट्रों द्वारा दोनों गुटों में शान्ति व्यवस्था स्थापित करने के लिए / संघर्ष समाप्त करने के लिए सक्रीय भूमिका निभाई। विभिन्न राष्ट्र लगातार इससे जुड़ रहे थे, ऐसा प्रतित हो रहा था कि जैसे की गुटनिरपेक्ष एक आन्दोलन है,

तटस्थता व गुटनिरपेक्षता में अन्तर :-

⇒ यह एक ऐसी नीति होती है जिसमें एक देश किसी भी अन्य देश से कोई भी सम्बन्ध नहीं रखता। दो देशों में यदि झगड़ा हो भी रहा हो तो वह सिर्फ झगड़ा देखता है उसे सुलझाता नहीं है।

गुटनिरपेक्षता → यह वह नीति है जो दोनों देशों या गुटों में शान्ति स्थापित करने का प्रयास करती है।

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के उदय के कारण :-

(i) शीत युद्ध :-
द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान दोनों महाशक्तियों USA व USSR के मध्य संबंधों में तनाव उत्पन्न हो गया था यह इस तनाव का मुख्य कारण विचारधारा, वर्चस्व को माना जाता है।
→ शीत युद्ध के कारण सम्पूर्ण विश्व दो गुटों में बँट गया था।

(ii) तृतीय विश्व के राष्ट्रों की सम्प्रभुता व अखण्डता की रक्षा के लिए उन्होंने किसी भी गुट में न जाने का फैसला लिया क्योंकि वे अगर किसी भी गुट में चले जाते तो गुट का स्वामी / नेता की बातें माननी पड़ती। इससे उनकी स्वतंत्रता व अखण्डता आहत होती।
ये राष्ट्र बड़ी मुश्किल से स्वतंत्र हुए थे ये फिर से गुलाम नहीं होना चाहते थे।

स्वतंत्र विदेश निती के संचालन की अभिलाषा

(iii) गुटनिरपेक्ष राष्ट्र अगर किसी गुट में शामिल हो जाते तो इससे तनाव में वृद्धि होती कमी नहीं।

(iv) सैनिक गुटों से पृथक रहने की नीति :-
अमेरिका → NATO (1949)

'उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन'

USSR → वारसा (1955)

अफ्रीकी व एशियाई देश उपनिवेशों से मुक्त हो ही रहे थे या नये-2 राष्ट्र बने ही थे तो वे फिर से गुटों में शामिल नहीं होना चाहते थे

NOTE :- 1955 में बांडुंग सम्मेलन (इण्डोनेशिया) में गुटनिरपेक्षता की संकल्पना सामने आई, जो NAM की औपचारिक शुरुआत मानी जाती है
स्थापना/शुरुआत 1961 के बेलग्रेड सम्मेलन से (25 देश)

NOTE * यह आन्दोलन भारत के प्रधानमंत्री पं० जवाहर लाल नेहरू, मिस्र के पूर्व राष्ट्रपति गमाल अब्दुल नासिर, युगोस्लाविया के राष्ट्रपति डा० सुकर्णो, घाना के क्वामे एन्क्रूमा, इण्डोनेशिया से टिटो का योगदान रहा।

वर्तमान में स्थिति -

यह संयुक्त राष्ट्र के बाद विश्व का सबसे बड़ा राजनीतिक समन्वय और परामर्श का मंच है। इस समूह में कुल सदस्य 120 विकासशील देश शामिल है। इसके अतिरिक्त NAM में 17 देशों व 10 अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों का पर्यवेक्षक का दर्जा प्राप्त है।

NAM के उद्देश्य :-

इस संगठन का उद्देश्य गुट-निरपेक्ष राष्ट्रों की राष्ट्रीय स्वतंत्रता, सार्वभौमिकता, क्षेत्रिय एकता व सुरक्षा को उनके साम्राज्यवाद, जातिवाद, रंगभेद, विदेशी आक्रमण, हस्तक्षेप, सैन्य अधिकरण आदि मामलों के विरुद्ध उनके युद्ध के दौरान सुनिश्चित करना है।

- अपनी सम्प्रभुता व अखण्डता की रक्षा करना।
- विश्व में शान्ति तथा देशों में मध्यस्था करवाना
- नव स्वतंत्र देशों को महाशक्तियों के दबाव से संरक्षण देना
- अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष को रोकना
- विदेशी मामलों में निर्णय लेने की स्वतंत्रता
- परमाणु हथियारों का विनाश या सीमित करना

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन और भारत :-

भारत गुटनिरपेक्ष आन्दोलन का संस्थापक तथा इसके सबसे महत्वपूर्ण सदस्यों में से है तथा 1970 के दशक तक भारत ने इस आन्दोलन की बैठकों में सक्रिय रूप से हिस्सा लिया – किन्तु 1970 के दशक के बाद गुटनिरपेक्ष आन्दोलन में भारत की स्थिति बदलने लगी और सोवियत संघ की ओर भारत का झुकाव बढ़ने लगा जिससे NAM के उद्देश्यों को लेकर छोटे देशों के बीच भ्रम की स्थिति पैदा हो गई।

अंतत इससे गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की स्थिति कमजोर हुई और अधिकांश छोटे देश या तो USA की ओर या फिर USSR की ओर अग्रसर होने लगे

NAM के प्रति भारत के झुकाव में कमी के कारण
- संकट के समय इस आन्दोलन के सदस्य देश भारत को अपना समर्थन देने में विफल रहे। उदा. के लिए वर्ष 1962 के युद्ध में घाना, इण्डोनेशिया जैसे देशों में चीन समर्थक नीति का अनुसरण किया तथा सन् 1971 में इण्डो. व मिस्र ने पाक. का समर्थन किया।
- भारत एक परमाणु शक्ति सम्पन्न देश है वहीं गुटनिरपेक्षता आन्दोलन के प्राथमिक उद्देश्यों में परमाणु निरस्त्रीकरण की नीति शामिल थी।

NAM के सम्मेलन :-

यूगोस्लाविया	बेलग्रेड	1961
मिस्र	काहिरा	1964
जाम्बिया	लुसाका	1970
अल्जीरिया	अल्जीयर्स	1973
श्रीलंका	कोलम्बो	1976
क्यूबा	हवाना	1979
	नई दिल्ली	1983
जिम्बाब्वे	हरारे	1986
	बेलग्रेड	1989
इण्डो	जकार्ता	1992
कोलम्बिया	कार्टाजेना	1995
द. अफ्रीका	डरबन	1998
मलेशिया	कुआलालम्पुर	2003
क्यूबा	हवाना	2006
मिस्र	शर्म अलशेख	2009
ईरान	तेहरान	2012

Page No.
Date

भारत की गुटनिरपेक्षता नीति के कारण :-

प्रो. M.S राजन के अनुसार -

- तनाव भड़काने की जगह तनाव कम करने की आवश्यकता
- अपनी एक अलग पहचान (राष्ट्रीय) बनाने की आवश्यकता
- अपनी सम्प्रभुता की रक्षा करना
- दोनों की गुटों में कमियाँ होना
- पारम्परिक धारणा, सहिष्णुता में विश्वास

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की उपलब्धियाँ :-

- NAM ने देशों को स्वतंत्रता आन्दोलन में समर्थन किया
- साम्राज्यवाद व रंगभेद नीति का विरोध
- उत्तर - दक्षिण संवाद (विकसित व विकासशील देशों के बीच संवाद) तथा दक्षिण - दक्षिण संवाद (विकासशील देशों के बीच संवाद) पर बल दिया
- परमाणु भयमुक्त विश्व के निर्माण के लिए प्रयास किया व निःशस्त्रीकरण की अवधारणा को लोकप्रिय बनाया

वर्तमान में प्रासंगिकता :-

- उसका महत्व आज भी है क्योंकि जो लक्ष्य तीसरी दुनिया ने निर्धारित किया वे वो अभी तक प्राप्त नहीं हुए है उन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए यह आज भी बना हुआ है।

दरअसल जब तक राष्ट्र मौजूद है और उनकी स्वतंत्र विदेश नीति पर चलने की प्रतिबद्धता है तब तक NAM अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का एक स्थायी तत्व बन गया है।

NAM की आलोचना :-

भारत की गुटनिरपेक्षता की नीति सिद्धान्तविहिन है क्योंकि भारत अपने राष्ट्रीय हितो को साधने के नाम पर प्रायः महत्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय मामलों पर कोई सुनिश्चित पक्ष लेने से बचता रहा ।

Question: संयुक्त राष्ट्र संघ पर एक लेख लिखिए।
अथवा UNO की महासभा व सुरक्षा परिषद् का वर्णन करो।
अथवा UNO की प्रासंगिकता का समझाइए।
अथवा सुरक्षा परिषद् में निषेधाधिकार को समझाइए (विटो) और भारत को सुरक्षा परिषद् की स्थायी सीट मिलने सम्बन्धित परिस्थितियों का वर्णन करो।

Answer :- संयुक्त राष्ट्र संघ (UNO) :-
UNO → United Nations Organisation :-
इसकी स्थापना 24 Oct. 1945 में की गई। UNO एक सार्वभौमिक अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था का उदा॰ है। अर्थात् अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में अराजकता की स्थिति रहती है। इस स्थिति में शान्ति व्यवस्था, सुरक्षा एवं राष्ट्रों के मध्य सहयोग स्थापित करने के लिए राष्ट्रों ने UNO की स्थापना की है।

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में 1st WW के बाद सार्वभौमिक व्यवस्था को लेकर एक संगठन बनाया गया जिसे 'राष्ट्र संघ' (Leauge of Nations) कहा जाता है। इसकी स्थापना 1920 में की गई। इसके प्रेरणास्रोत वुडरो विल्सन थे।

परन्तु राष्ट्र संघ 2nd WW को नहीं रोक पाया। जिसके निम्न कारण थे -

(i) 1930 की आर्थिक नीति
(ii) गुटबंदीकरण की राजनीति
(iii) 2nd W.W

(iv) हिटलर व मुसोलिनी की नीतियाँ (वर्चस्व) (निरंकुशवादि

UNO 1945 में स्थापित एक अन्तर्राष्ट्रीय संगठन है। वर्तमान में इसमें शामिल सदस्यों की संख्या 193 है।

इसका mission or work इसके चार्टर में नीहित उद्देश्यों और सिद्धान्तों द्वारा निर्देशित होता है तथा संयुक्त राष्ट्र के विभिन्न अंगों व विशेष एजेंसियों द्वारा इन्हें कार्यान्वित किया जाता है।

अन्तर्राष्ट्रीय संगठन पर UN सम्मेलन (1945) यह सम्मेलन सेन फ्रांसिस्को (USA) में आयोजित किया गया इसमें 50 देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया व UN चार्टर पर हस्ताक्षर किए।

NOTE

→ UNO के जन्मदाता अमेरिका के राष्ट्रपति रूजवेल्ट है।

UNO के उद्देश्य :-

1. अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति
2. मानवाधिकारों का संरक्षण
3. सतत विकास को बढ़ावा देना
4. निशस्त्रीकरण को बढ़ावा

Principles of UNO :-

UNO व उसके सदस्यों को निम्न काम करना होता है —

- सभी सदस्यों की प्रभुसत्ता का सम्मान
- झगड़ों का निपटारा शान्ति पूर्वक
- जो देश इसके सदस्य नहीं है वह भी UNO के सिद्धान्तों का अनुसरण करे
- सभी सदस्य UNO को हर प्रकार से सहायता देगें।
- UNO किसी भी देश के घरेलू मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगा।

Membership of UNO :- दो प्रकार से

(सदस्य) (i) वे सदस्य जो प्रारम्भ से UN में शामिल होगए थे

(ii) वे सदस्य जो UNO में बाद में शामिल हुए

→ इस प्रकार वे सभी राष्ट्र जो वर्तमान चार्टर में दिए गए ~~चार्टर~~ दायित्वों व नैतिक बन्धनों को मानते है वे शामिल हो सकते है UNO में।

*→ UNO में किसी देश को सदस्यता सुरक्षा परिषद की सिफारिश पर महासभा द्वारा दी जाती है तथा यदि को राष्ट्र UN के निर्देशों का बार -2 उल्लंघन करता है तो सुरक्षा परिषद की सिफारिश पर उसे महासभा से निकला जा सकता है।

वर्तमान में 193 राष्ट्र (193 वाँ राष्ट्र द. सूडान (2012)

UNO के घटक / अंग

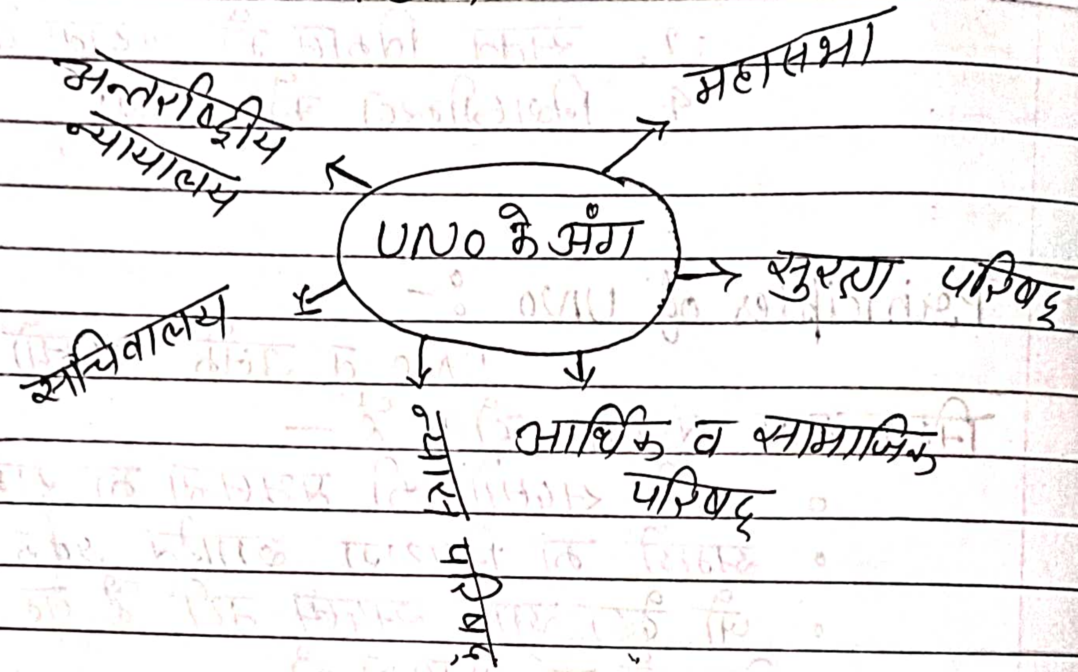

(i) महासभा General Assembly :-

- महासभा UNO का महत्वपूर्ण अंग है
- इसे 'विश्व की संसद' भी कहते हैं।
- महासभा में UN के सभी 193 सदस्य राष्ट्रों का प्रतिनिधित्व है।
- यह विचार - विमर्श, नीति निर्धारण जैसे कार्यों के लिए उत्तरदायी है
- प्रतिवर्ष sep. में सभी सदस्यों की बैठक न्यूयॉर्क के जनरल असेम्बली में की जाती है तथा सामान्य बहस करते हैं

- महासभा में महत्वपूर्ण प्रश्नों पर निर्णय लेने जैसे कि शांति व सुरक्षा, नए सदस्यों के प्रवेश तथा बजटीय मामलों के लिए 2/3 बहुमत की आवश्यकता होती है।

Page No.
Date

अध्यक्ष :- महासभा द्वारा प्रत्येक वर्ष 1 वर्ष के लिए चुनते हैं

(iii) आर्थिक व सामाजिक परिषद :-
यह समन्वय, नीति समीक्षा आर्थिक सामाजिक व पर्यावरणीय मुद्दो पर तथा लोकोपकारी स्वरूप की समस्याओं को सुलझाने के लिए राष्ट्रों के बीच सहयोग प्राप्त करना व जाति, भाषा, लिंग तथा धर्म के उल्लेख बिना मानव के मूल अधिकारों तथा स्वतंत्रताओं के लिए लोगों में सम्मान की भावना पैदा करना इसका उद्देश्य रहा है।

(iv) न्यास परिषद :- Trusteeship Council :-
महासभा के सहायक अंग के रूप में यह असामरिक ट्रस्ट भूक्षेत्रों के प्रशासन का निरीक्षण। तथा सामरिक क्षेत्रों के मामलों में सुरक्षा समिति के सहायक अंग के रूप में कार्य करती है।
इसका मुख्यालय न्यूयॉर्क में है
→ यह किसी गरीब देश जो सभी तरह से पिछड़ा हुआ है उस को सभी तरह से सहायता उपलब्ध करवाती है और उसका विकास करने में सहायक होती है।

(v) सचिवालय :-
यह UN का मुख्यालय है जो UNO के अन्य संगठनों या एजेन्सियों द्वारा बनाए गए प्रोग्राम व नीतियों को प्रशासित व समन्वित करता है।
→ सचिवालय का प्रभारी होने के नाते महासचिव

का मुख्य कार्य UN के रिकार्ड रखना व उन कार्यों को करना जो चार्टर द्वारा प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से किसी भी अंग को न दिए गए हो

→ अप्रैल व जुलाई में दो बैठक होती है।
→ इसका कार्यकाल 5 वर्ष होता है।

(vi) अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय International Court of Justice :-

नीदरलैण्ड → हेग में मुख्यालय

यह UNO के सदस्यों को पूरी आजादी देता है कि वह अपने झगड़ों का निपटारा न्यायालय के अतिरिक्त दूसरी अदालतों में कर सकते हैं, इसके लिए उन्हें एक समझौता करना पड़ेगा।

→ सदस्य देशों को अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय की उन विषयों पर निर्णयों को, जिनमें वे स्वयं भी शामिल होते हैं मानने के लिए प्रतिबद्ध होते हैं

अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय में नई सदस्यता के लिए निम्न शर्तों को पालन होता है -

(A) संविधान तथा न्यायालय के सम्बन्ध में दूसरे प्रतिबन्धों को स्वीकार करना।

(B) महासभा द्वारा अनुमानित व्यय में अपना योगदान देना।

कुल न्यायाधीश → 15

न्यायाधीशों का कार्यकाल - 9 वर्ष (3 वर्ष के बाद 5 (1/3) न्यायाधीश सेवानिवृत्त हो जाते हैं

India से जस्टिस दलवीर भंडारी वर्तमान में अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के न्यायाधीश है।

Most • (ii) सुरक्षा परिषद्
यह UN की कार्यकारिणी समिति है जिसके कंधे पर अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति एवं सुरक्षा को बनाए रखने का उत्तरदायित्व है।

सुरक्षा परिषद् पर का गठन :-
सुरक्षा परिषद् में UN के 15 सदस्य हैं -

5 स्थायी
→ अमेरिका
→ ब्रिटेन (इंग्लैंड)
→ फ्रांस
→ रूस
→ चीन

10 अस्थायी
महासभा द्वारा 2 वर्ष के लिए चुने गए सदस्य देश।

अस्थायी सदस्यों का चुनाव कैसे ? -
- महासभा की भौगोलिक परिस्थितियों को ध्यान में रखकर ताकि सुरक्षा समिति में सभी क्षेत्रों को विश्वव्यापी प्रतिनिधित्व मिल सके।
- महासभा द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति व सुरक्षा में उस राष्ट्र का योगदान को देखती है

* सुरक्षा परिषद् के कार्य एवं शक्तियाँ :-
- अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति व सुरक्षा से सम्बन्धित निर्णय लेने की शक्तियाँ।
- अपने निर्णयों के निशस्त्र क्रियान्वयन की शक्तियाँ
- नए सदस्य, महासचिव व अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के न्यायाधिश के चुनाव की शक्तियाँ।
- विवादों का शान्तिपूर्ण निपटारा।

सुरक्षा परिषद् में परिवर्तन की आवश्यकता क्यों?

- UNO की स्थापना 1945 में की भू-राजनीति के हिसाब से हुई थी लेकिन वर्तमान में 2nd (युद्ध) की पृष्ठभूमि से काफी अलग पृष्ठभूमि है।

- वर्तमान में UNSC के 5 देशों में यूरोप का सबसे ज्यादा प्रतिनिधित्व है जबकि यहाँ विश्व की कुल आबादी का 5% ही निवास करती है।
- अफ्रीका और द० अमेरिका महाद्वीप का कोई भी देश सुरक्षा परिषद् का स्थायी सदस्य नहीं है जबकि UN का 50% से अधिक कार्य अकेले अफ्रीकी देशों से ही सम्बन्धित है।

- शांति स्थापित करने वाले अभियानों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले देश जैसे भारत व अन्य देशों के पक्ष को P5 द्वारा नज़रअंदाज कर दिया जाता है।

भारत सुरक्षा परिषद् का दावेदार क्यों? -

(i) भारत दुनिया का दूसरा सबसे अधिक जन० वाला देश है। विश्व की कुल जन. का 1/5 वां हिस्सा भारत में निवास करता है।
(ii) भारत UN की सेना में सबसे ज्यादा सैनिक भेजने वाला देश है।
(iii) भारत की विदेश नीति ऐतिहासिक रूप से विश्व शान्ति को बढ़ावा देने वाली रही है।

uddha:- भारत द्वारा किया गया प्रथम सफल परमाणु परीक्षण
... परीक्षण 18 may 1974 को प्रधानमंत्री इन्दिरा

... है जो एक

- भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है।
- भारत ने अन्य देशों को भी UNO में सदस्य बनने के लिए प्रेरित किया
- भारत एक लोकतांत्रिक देश है यह बात UNO में भी है कि लोकतांत्रिक देश होना चाहिए।
- WHO में भारत का सबसे बड़ा योगदान रहा जैसे पोलियो, वैक्सीन व मलेरिया

Why India should not Permanent Member:-

① NPT (1968) नाभिकिय प्रसार संधि
UNO ने नियम बनाया था कि 1968 के बाद परमाणु हथियार नहीं रखेंगे। लेकिन भारत ने इस पर हस्ताक्षर नहीं किए।
No 1st use, only Retaliate → जवाब में जवाब देना

② CTBT (1996):-
बड़े ~~पम~~ परमाणु ~~बम्म~~ बम पर कोई परीक्षण नहीं करेगा भारत ने underground परमाणु परीक्षण किया क्योंकि UNO के नियम में केवल वायु, भूमि व जल में परमाणु परीक्षण ना करने का नियम था ना कि भूमिगत।

③ J & K (1950) → पाक मना करता है veto के लिए
↳ UNO ने Dixon Commision आयोग का गठन किया और इसने जाँच करने के बाद कहा कि यह अन्तर्राष्ट्रीय मामला नहीं है, यह घरेलू मामला है।

④ बजट :- कम

MTCR

G4 (2005) for Permanent seat (Veto)

	विरोध
① India	UK, China
② Japan	Russia and China
③ Germany	Russia & China
④ Brazil	USA (थोड़ा विरोधी)

[मॉडलस्की]

India's Foreign Policy

भारत व उसके सम्बन्ध

पड़ौसी राज्य
- → पाकिस्तान
- → नेपाल
- → भूटान
- → बांग्लादेश
- → श्रीलंका
- → अफ़गानिस्तान

दूरस्थ / बाह्य राज्य
- → USA
- → ~~US~~ रूस
- → चीन

भारत की विदेश नीति :-

विदेश नीति :- अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के निर्वाह के लिए एक देश द्वारा कुछ नियम, सिद्धान्त व कुछ उद्देश्य निर्धारित किए जाते है। वे सिद्धान्त विदेश नीति कहलाते है।
विदेश नीति का मुख्य आधार – राष्ट्रीय हित है।
प्रत्येक राष्ट्र अपनी विदेश नीति का निर्माण कई आधारों पर करते है।

विदेश नीति को निर्धारित करने वाले कारक :-

① भौगोलिक कारक :-
- → क्षेत्रफल अधिक → वर्चस्व रहेगा।
- → जनसंख्या अधिक → वर्चस्व कम वाले पर
- → संसाधन तेल कोयला आदि अधिक → वर्चस्व
- → अवस्थिति LandLock देशो पर दूसरे देशो का वर्चस्व

(2) विचारधारा :-
- → पूंजीवादी
- → साम्यवादी
- → मिश्रित

(3) शासन प्रणाली :-
- → लोकतंत्र → भारत
- ब्रिटेन → राजतंत्र →
- उत्तरी कोरिया चीन → तानाशाही →

(4) क्षेत्र :- जैसे

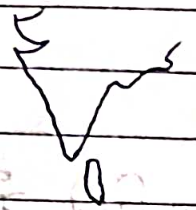

भारत व श्रीलंका के साथ बेहतर संबंध स्थापित करना पड़ेगा। क्योंकि तमिलनाडु में तमिल व श्रीलंका के तमिल लोग भावनात्मक रूप से एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं यदि श्रीलंका की सरकार तमिलों के खिलाफ कार्यवाही करती है तो उससे भारतीय नाराज होंगे और दंगे शुरू हो जाएंगे।
इसी तरह UP व बिहार के लोग मदेशी (नेपाल के तराई क्षेत्र में रहने वाले भारतीय लोग) का संबंध भी ऐसा ही है। प० बंगाल + बांग्लादेश।

(5) नेतृत्व :- भारत एक लम्बे उपनिवेशवाद व साम्राज्यवादी शक्तियों से आजाद हुआ। भारत 1947 में आजाद होने के बाद आर्थिक स्थिति अच्छी न थी और उस समय दुनिया USA व USSR के गुटों में थी (पूंजीवादी + साम्यवादी) परन्तु भारत ने गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाई और भारत ने उन देशों से संबंध स्थापित किया जिनसे उसे आर्थिक लाभ प्राप्त हो रहा था जैसे अरब देश

Page No. ____ Date ____

6. परम्पराए या समाज व संस्कृति :-

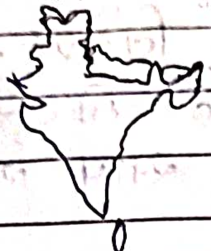

विदेश नीति को निर्धारित करने मे सांस्कृतिक तथा परम्पराओं का भी महत्वपूर्ण योगदान रहता है।

सभी देश अपनी परम्पराए सामाजिक आदर्शों तथा मूल्यों को ध्यान में रखकर विदेश नीति का निर्माण करते है।

जैसे India व Nepal के सीमावर्ती क्षेत्र India के द. भाग में तमिलनाडु के तमिल लोग तथा श्रीलंका के उ. भाग में तमिल लोगों की परम्पराए व संस्कृति समान है अतः उन पर

विदेश नीति के प्रकार :-

Permanent
- → शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व
- → रंगभेद का विरोध
- → गुटनिरपेक्षता
- → उपनिवेशवाद व साम्राज्यवाद का विरोध
- → निःशस्त्रीकरण का पालन
- → UNO में आस्था
- → पंचशील सिद्धान्त

Situation (परिस्थिति अनुसार)
- → Look East
  - ↳ (Act East)
- → समझौता एक्सप्रेस
- → गुजराल सिद्धान्त
- → Look West Policy
- → Blue Eco. Policy
- → Act with ASEAN
- → Center Policy
- → गुटनिरपेक्षता 2.0

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 51 क में इसका वर्णन किया गया है।

(i) शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व की नीति :-
भारत ने अपनी विदेश नीति में शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व की नीति को अपनाया है अर्थात भारत अन्य देशों के साथ शान्तिपूर्ण संबंध बनायेगा।
भारत की विदेश नीति अहिंसा के भी विचार का समर्थन करती है। वह 'जीओ और जीने दो सिद्धान्त' की पालना करती है

(ii) रंगभेद का विरोध :-
विश्व में नस्ल या मनुष्य के रंग के आधार पर भेदभाव का विरोध हमारे देश की विदेश नीति की विशेषता रही है।

(iii) गुटनिरपेक्षता :-
भारत विदेश नीति में गुटनिरपेक्षता की नीति को अपनाता है अर्थात भारत किसी भी गुट में शामिल नहीं है वह एक स्वतंत्र रूप से रहता है। इस नीति का अनुसरण करने वाले लोग विश्व शान्ति (देश) विश्व की गुटबाजी की राजनीति के विलग्न रहने को प्राथमिकता देते हैं किन्तु विश्व शान्ति व सुरक्षा के मुद्दों पर UNO को भरपूर सहायता प्रदान करते हैं

(iv) उपनिवेशवाद व साम्राज्यवाद का विरोध :-
भारत उपनिवेशवाद व साम्राज्यवाद का दंश भोग चुका है।

(v) निःशस्त्रीकरण का पालन करना :-
भारत विदेश नीति में निःशस्त्रीकरण पर बल देता है और उसका बेखूबी से पालन करता है।

(vi) पंचशील समझौता :-
यह समझौता भारत के प्रधानमंत्री पं० जवाहर लाल नेहरू तथा चीन के राष्ट्रपति चाऊ एन लाई के मध्य 29 अप्रैल 1952 को हुआ इसके नियम / शर्तें थी –

- एक दूसरे के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप नही करेंगे
- अनाक्रमण
- समानता
- शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व
- एक-दूसरे देश की अखंडता व सर्वोच्च सत्ता के लिए पारस्परिक सम्मान की भावना।

(vii) UNO में आस्था :-
भारत की विदेश नीति पूर्ण रूप से UNO में आस्था रखता है। भारत UNO के नियम तथा सिद्धान्तों की पालना करता है।

② Situation परिस्थिति अनुसार
वह विदेश नीति जो किसी देश के द्वारा परिस्थिति को देखकर अपना ली जाती है जैसे कुछ उदा० निम्न है –

(i) Look East Policy :-
Look East Policy अर्थात पूर्व की ओर देखो नीति दक्षिणी-पूर्वी एशिया के

राष्ट्रों के साथ व्यापक आर्थिक व रणनीतिक संबंधों को विकसित करने का एक मजबूत प्रयास है
Nov. 2014 में इसका नाम बदलकर Act East Policy कर दिया गया

(ii) Look West Policy :- भारत के लिए अर्थव्यवस्था में पश्चिमी एशिया के देश महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है यहाँ से भारत तेल प्राप्त करता है और अधिकांश भारतीय रोजगार प्राप्त करने हेतु इन अरब देशों में निवासित है।

(iii) गुजराल सिद्धान्त :-
यह सिद्धान्त इन्द्र कुमार गुजराल (पूर्व प्रधानमंत्री) ने दिया। इस सिद्धान्त का कारण यह है कि भारत अपने पडोसी देशों के साथ संबंध अच्छे बनाएगा तथा उनके साथ हुए विवादों को शांतिपूर्ण या बातचित के जरीये सुलझाना होगा। भारत किसी भी देश के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगा।

(iv) Blue Eco. Policy :-
यह विदेश नीति महासागरों या समुद्रों में व्यापार जैसे मत्स्यपालन आदि को उन्नत बनाने के लिए भारत अपनी अर्थव्यवस्था को उन्नत बनाने के लिए इस नीति का पालन करता है।

Act with ASEAN :- 8 Aug 1967

कुछ चुनौतियां सभी देशों की एक समान है और इन्हीं चुनौतियों का मुकाबला सामूहिक रूप से करने के लिए यह संगठन अस्तित्व में लाया गया इसी के साथ-2 आर्थिक प्रगति व अर्थव्यवस्था को मजबूत करना भी रहा है। इस संगठन का मुख्य उद्देश्य 'साझा बाजार तैयार करना है।

Prime Minister

① Nehru's Foreign Policy of India

नेहरू का विदेश नीति में योगदान

- → 1947 में एशिया-एफ्रो सम्मेलन
- → 1955 में बाडुंग सम्मेलन
- → 1954 का पंचशील सिद्धान्त
- → 1949 में USA की यात्रा
- → 1961 में NAM की स्थापना

नेहरू की विदेश नीति में आलोचना :-

→ J & K को UNO में सौंप देना
→ China को तिब्बत सौंप देना
→ China के साथ सम्बन्धों में दूरदर्शिता न होना (1962 का India + China War)
↳ हिन्दी - चीनी भाई - 2

LBS की विदेश नीति

भारत - पाक युद्ध 1965 को जीता

चरमबिन्दु → Indira Gandhi's Foreign Policy

→ 1971 भारत - पाक युद्ध → बांग्लादेश का निर्माण
↳ 3 July 1972 शिमला समझौता
→ 1974 परमाणु परिक्षण (शांति के लिए)
↳ NPT पर ह० नहीं
→
→ 1975 सिक्किम का विलय
↳ जनमत संग्रह द्वारा
→ 1971 भारत - रूसिया संधि (20 वर्ष तक)

Indira Gandhi 's Foreign Policy की आलोचना (criticism) :-

→ 1971 का अरब - इज़राइल युद्ध

नरसिम्हा राव की विदेश नीति

→ Look East Policy 1992

अटल बिहारी वाजपेयी की विदेश नीति

→ परमाणु परीक्षण
→ कारगिल युद्ध 1999
→ लाहौर बस यात्रा 1999
→ रूस के साथ सम्बन्ध 2003 (रक्षा समझौता)
→

SMS सरदार मनमोहन सिंह की विदेश नीति

→ West Asia Policy

→ Extended Neibhbourhood Policy

Modi की विदेश नीति

- → Pra Diplomacy
- → Project Sagar
- → Policy of Diaspora
- → पहले पड़ौस की नीति
- → Soft Power
- → आक्रामक विदेश नीति
- → सांस्कृतिक विदेश नीति

Page No.
Date

नेहरू की विदेश नीति :-

(i) 1947 में एशिया-एफ्रो सम्मेलन :-
1947 में भारत आजाद हुआ तब उसकी मदद करने वाला कोई भी देश नहीं था।
नेहरू जी ने भारत को एशिया और अफ्रीका के नव स्वतंत्र देशों के साथ सम्पर्क स्थापित किया।

(ii) बाडुंग सम्मेलन :- इण्डोनेशिया 1955
गुटनिरपेक्षता को बढ़ावा व प्रचार-प्रसार के लिए नेहरू जी द्वारा बांडुंग में सम्मेलन का आयोजन किया गया तथा उसका नेतृत्व किया।

(iii) पंचशील समझौता 1954 (29 अप्रैल)
↳ भारत + चीन
यह समझौता भारत के PM नेहरू जी व China के राष्ट्रपति चाउ-एन लाई के मध्य हुआ इस समझौते में 5 शर्तें या नियम बनाए गए
· अ 3
· स 2

(iv) USA की यात्रा :-
नेहरू ने USA जैसी महाशक्ति से अच्छे सम्बन्ध बनाने के लिए वहाँ (USA)

की यात्रा की।

(v) NAM की स्थापना :-

नेहरू जी ने विश्व में पूंजीवादी व साम्यवादी गुट में शामिल नहीं होने के लिए पाँच देश जो अभी-2 स्वतंत्र हुए थे उन देशों के उच्च अधिकारी के साथ मिल कर NAM की स्थापना की।

(vi) UNO को समर्थन :-

UNO की स्थापना 1945 में हुई। नेहरू जी ने UNO को सैन्य शक्ति व आर्थिक क्षेत्र आदि कई प्रकार से समर्थन किया।

Nehru की विदेश नीति की आलोचना :-

(i) J&K को UNO में सौंप देना :-

भारत व पाक. J&K को लेकर आपस में झगड़ते थे। नेहरू जी ने इस मुद्दे को UNO में सौंप दिया

(ii) China के साथ सम्बन्धों में दूरदर्शिता न होना :-

भारत व China के सम्बन्धों में दूरदर्शिता न होने के कारण तिब्बत को लेकर वाद-विवाद करने लगे।

नेहरू जी ने चीन के साथ गहरे सम्बन्ध भी

भी स्थापित किए और कहा हिन्दी-चीनी भाई-भाई है। लेकिन यह मित्रता एकतरफा थी, और नेहरू की यह विदेश नीति असफल रही।

(iii) तिब्बत को China को सौंप देना:-
1957 में India और China के संबंध अच्छे होने तथा हिन्दी-चीनी भाई भाई की नीति से Nehru ने तिब्बत China को सौंप दिया

LBS की विदेश नीति:-

↳ भारत-पाक 1965 का युद्ध:-
LBS के समय भारत व पाक के मध्य सन 1965 में कश्मीर को लेकर युद्ध हुआ इस युद्ध का आरम्भ पाक. ने अपने सैनिकों को घुसपैठियों के रूप में भेज कर की। UNO ने इस युद्ध का विराम ताशकन्द समझौता के द्वारा करवाया

Indira Gandhi की Foreign Policy:-

(i) 1971 का भारत-पाक युद्ध: इन्दिरा गाँधी के समय भारत व पाक. में 1971 में युद्ध हुआ और इस युद्ध के दौरान एक नए देश बांग्लादेश का निर्माण हुआ। पाक. की इस युद्ध में हार हुई। 3 July 1972 में शिमला समझौता हुआ 1974 में भारत व पाक के मध्य त्रिपक्षिय

त्रि-पक्षीय समझौता हुआ जिसमें युद्धबन्दियों की समस्या का समाधान हुआ।
1974 में दोनों देशों के मध्य डाक, तार, यात्रा आदि का समझौता हुआ।

(ii) 1974 का परमाणु परीक्षण :-

इन्दिरा गाँधी ने भारत में 1974 को परमाणु परीक्षण करवाया जो सफल रहा। अन्य देशों (मित्र राष्ट्रों) द्वारा उसका विरोध किया तो इन्दिरा गाँधी ने कहा कि यह परीक्षण हम शांति के लिए किया है इस परीक्षण को SMILING BUDDHA के नाम से जाना गया।

(iii) सिक्किम का विलय :-

इन्दिरा गाँधी ने 1974 में सिक्किम को भारत में विलय कर लिया। सिक्किम में राजा तानाशाही प्रवृत्ति का था लेकिन जनता भारत में रहना चाहती थी तानाशाही राजा स्वयं को china में शामिल करना चाहता था। इन्दिरा गाँधी को यह पता चला कि जनता भारत का हिस्सा बनना चाहती है तो उसने वहाँ पर जनमत संग्रह करवाया और इसे जनमत के साथ इन्दिरा गाँधी ने सिक्किम का विलय भारत में कर लिया उससे वहाँ का राजा भूटान को गहरा धक्का लगा और china ने इसका विरोध किया।
36 वाँ संविधान संशोधन अधिनियम 1975 के द्वारा सिक्किम को पूर्ण राज्य का दर्जा प्राप्त हुआ

इन्दिरा गाँधी की विदेश नीति की आलोचना:

|→ 1971 का अरब इजराइल War :-

इस युद्ध के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था बुरी तरह लड़खड़ाने लगी। क्योंकि भारत को तेल, गैस आदि का आयात यहीं से करता था।

④ नरसिम्हा राव की विदेश नीति

|→ Look East Policy 1992

एशिया के दक्षिणी-पूर्वी क्षेत्र आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण होने के कारण बाजार के रूप में महत्वपूर्ण शक्तियों का आकर्षण केन्द्र रहा है। अतः भारत ने इन देशों के बाजार अर्थव्यवस्था अच्छी होने के कारण सम्बन्ध भी अच्छे बनाए।

5 अटल बिहारी वाजपेयी की विदेश नीति :-

(i) परमाणु परीक्षण :-

11 मई 1998 में राजस्थान के पोखरण में तीन बमों का सफल परीक्षण किया गया जिसके बाद भारत न्यूक्लियर स्टेट बन गया। इस मिशन का नाम 'ऑपरेशन शक्ति' था। उस समय रक्षामंत्री जॉर्ज फर्नांडिस व राष्ट्रपति APJ अब्दुल कलाम थे।

वाजपेयी ने जब सभी राष्ट्र व विपक्षी नेताओं द्वारा विरोध किया जा रहा था तो कहा कि यह परमाणु परीक्षण हमने सुरक्षा के लिए किया है

(ii) कारगिल युद्ध 1999

1999 में भारत - पाकिस्तान मे कारगिल युद्ध हुआ यह युद्ध मई में शुरु हुआ तथा 26 July को अटल बिहारी वाजपेयी के ऑपरेशन विजय अर्थात कारगिल पर फतेह प्राप्त कर ली।

(iii) लाहौर बस यात्रा 1999

लाहौर बस यात्रा भारत-पाक. के रिश्तों को सहज बनाने में काफी मददगार रही थी लेकिन दो महिने बाद ही कारगिल पर पाक. ने आक्रमण कर दिया

(iv) रूस के साथ समझौता :-

अटल बिहारी वाजपेयी ने रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ 2009 में 'रक्षा समझौता' किया. रूस ने भारत को व्यापार व आर्थिक सहयोग प्राप्त करवाया।
'रक्षा समझौता' के अनुसार भारत में मुसिबत के समय रूस है उस को हर हाल मे मदद तथा युद्ध आदि से रक्षा करेगा।

(V-)

SMS (सरदार मनमोहन सिंह) की विदेश नीति :-

→ West Asia Policy :-
भारत ने पश्चिमी एशियाई देशों के साथ सम्बन्ध स्थापित किए जिसका मूल कारण इन देशों से प्रौद्योगिकी, तेल, गैस तथा अन्य आवश्यक तकनीकि आदि जो भारतीय अर्थव्यवस्था में को उन्नत बना सके, रहा है।

Extended Neibhbourhood Policy :-
SMS का मानना था कि हमें पड़ोसी देशों से अच्छे संबंध बना कर रखना चाहिए।

Modi की विदेश नीति

(i) पहले पड़ौस की नीति:- नरेन्द्र मोदी ने भारत की विदेश नीति को मजबूत बनाने के लिए अपने शपथ ग्रहण समारोह में सार्क देशों के अधिकारियों को भी आमंत्रित किया ताकि इन देशों के साथ सम्बन्ध अच्छे बनाया जाता सके।

(ii) Project Sagar :- मोदी जी ने विदेश नीति में Project Sagar की नीति को अपनाया जिससे की महासागरीय क्षेत्रों से संबंधित रही है। इस नीति से हिन्द महासागर क्षेत्र और उसके तटवर्ती देशों में व्यापार करना व सहायता प्रदान करना इसका उद्देश्य रहा

(iii) Soft Power :- 'Soft Power' किसी देश की वह क्षमता होती है जिससे वह बिना बल प्रयोग या दबाव के दूसरे देशों को अपनी इच्छानुसार कार्य पूर्ती के लिए मना सकता है।

(iv) Neighbourhood First Policy :- इसने भी भारतीय विदेश नीति में विद्यमान निरंतरता के तत्वों को कायम रखा गया है। जिसमें वैश्विक शांति, मित्रता व सौहार्दपूर्ण सम्बन्धों पर बल प्रदान किया

(v) Policy of Diaspora :-

जो भारतीय व्यक्ति किसी कार्य के उद्देश्य से या अन्य कारणों से वह विदेश में निवास कर रहे है उन की सुरक्षा भारत सरकार करेगी और उस देश से भारत सरकार को संबंध अच्छे बनाने होगे ताकि भारतीय की रक्षा हो सके।

(vi) आक्रामक विदेश नीति :-

भारत अब आक्रामक विदेश नीति को अपना रहा है।

Question:— भारत - अमेरिका के सम्बन्धों को समझाइए इण्डो Pacific क्षेत्र में Quad के महत्व को समझाइए।

भारत व अमेरिका संसार के सबसे बड़े लोकतांत्रिक राज्य है। भारत व अमेरिका के सम्बंधों में लम्बा तनाव और लम्बा ही सहयोग रहा है अर्थात् दोनो के सम्बन्ध सौहार्दपूर्ण एवं विवादस्त रहे है।

अमेरिका एक महाशक्ति है, जो सम्पूर्ण विश्व को नियंत्रित करने का कार्य करती है अर्थात अमेरिका ने एक वैश्विक व्यवस्था का निर्माण किया है

[आर्थिक → INF, WTO, World Bank

राजनीति → G20, G7, UNO]

भारत अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में अपनी स्थिति को कायम करने के लिए विभिन्न तरह की रणनीतियाँ अपनाता रहा है।

1947 में जब भारत स्वतंत्र हुआ उस समय शीत युद्ध कायम था और सम्पूर्ण विश्व दो ध्रुवों में बँट चुका था पहला पूंजीपति ध्रुव व दूसरा साम्यवादी ध्रुव था।

1991 सोवियत संघ के विघटन के बाद भारत ने अमेरिका से परस्पर सम्बन्ध बनाने की नीति अपनाई।

India and USA के Relation को दो पक्षों में देख सकते है → विपक्ष में तथा पक्ष में।
इनके मध्य सम्बन्धों को हम दो समय काल में देख सकते है –
(i) 1949 से 1991 के बीच।
(ii) 1991 से Present तक

(i) 1949 से 1991 के बीच विपक्ष / विवादीत मुद्दे –

- शीत युद्ध ↳ डियागोगार्सिया मे अमेरिकी अड्डा।
- NAM
- चीन को मान्यता
- पंचशील समझौता।
- NPT पर ह० नही (India)
- 1971 (China + PAK + Russia)
- 1974 परमाणु परिक्षण
- कश्मीर

(ii) 1991 से वर्तमान तक

पक्ष ← → विपक्ष

पक्ष:
- मलाबार सैनिक अभ्यास
- QUAD
- परमाणु परिक्षण

विपक्ष:
- CTBT

... किया गया प्रथम सफल परमाणु
... के प्रधानमंत्री ...

(i) 1949 - 1991 के मध्य विवादित सम्बन्ध

Ⓐ शीत युद्ध :-

शीत युद्ध के दौरान भारत USA की पूंजीपति विचारधारा तथा साम्यवादी विचारधारा (USSR) दोनों में ही शामिल नहीं हुआ। ये भारत को अपने में मिलाना चाहते थे लेकिन भारत अपना अलग की गुट बना लिया।

Ⓑ NAM 1961 में भारत ने NAM की स्थापना की और जो उपनिवेश देश आजाद हुए ही थे वे फिर से किसी का उपनिवेश नहीं बनना चाहते थे ये सभी NAM में शामिल हो गए तथा NAM का नेतृत्व India कर रहा था यह देख USA भारत के विरुद्ध था।

Ⓒ पंचशील :-

China व India के मध्य हुए पंचशील समझौते के कारण USA नाराज रहा।

Ⓓ NPT पर ह. नहीं -

India ने NPT पर ह. नहीं किए यह एक ऐसा प्रस्ताव था जो भेदभावपूर्ण रहा उसमें यह था कि 1967 से पहले जिन देशों के पास परमाणु हथियार हैं वो ही रखेगा तथा जिन के पास नहीं है वह परमाणु हथियार नहीं रखेगा ना ही बनाएगा।

Ⓔ 1974 परमाणु परीक्षण :-

PM इन्दिरा गांधी ने भारत

में परमाणु परीक्षण करवाया और कहा कि यह हमने शान्ति के लिए किया है।
इससे USA नाराज रहा और पाक. को मिसाइल्स आदि देने का निर्णय किया

(E) चीन को मान्यता :-

USA ने चीन को साम्यवादी बनने से नहीं रोक पाया 1947 में चीन में साम्यवादी क्रांति के दौरान। USA यह चाहता था कि भारत चीन को मान्यता प्रदान न करे पर पं. जवाहर लाल ने मान्यता अपनी असंलग्नता के कारण दे दी भारत ने UNO में लगातार प्रस्ताव लाना (चीन की सदस्यता के लिए)

* 1949 - 1991 के मध्य सहयोग :-

- सैन्य सामग्री उपलब्ध - 1962
- PI 480 समझौता 1963
- अफगान युद्ध
- असली गुटनिरपेक्षता 1977

• विचारधारा के आधार पर :-

- लोकतंत्र → यह भावना या स्थिति India ने USA से प्राप्त की
- स्वतंत्रता
-

विपक्ष
E

(A) सैन्य सामग्री उपलब्ध :-

• 1962 में India and china war में USA ने India को ~~weapons~~ सैन्य सामग्री उपलब्ध करवायी

(B) PL480 समझौता :-

भारत और अमेरिका के बीच 1960 में 4 वर्षों के लिए PL480 एक समझौता हुआ जिसके अन्तर्गत अमेरिका ने भारत को पर्याप्त मात्रा में खाद्यान्न भेजने का आश्वासन दिया (1964)

(C) अफगान युद्ध :-

1979 में अफ. में साम्यवादी का तख्तापलट हो गया अर्थात् पूंजीवादी विचारधारा को अफ. ने अपना लिया तो USSR ने अफ. में आक्रमण किया। अफ. के साथ USA था और India था।

(D) असली गुटनिरपेक्षता 1977

1977 के चुनाव के दौरान जनता पार्टी के नेता 'असली' या 'सच्ची' गुटनिरपेक्षता की बात करते तो ~~अ.~~ उक्त सम्भावना अधिक पुष्ट होती थी।

डा. वेदप्रताप वैदिक के शब्दों में कुल मिलाकर यह स्पष्ट हो गया कि यदि सच्ची गुटनिरपेक्षता का मतलब भारतीय परमाणु संयन्त्रों को अमरीकी निगरानी में रख देना लगाया जा रहा था तो ऐसी सच्ची गुट-निरपेक्षता को जनता सरकार ने ठुकरा दिया।

[India and Shri Lanka]

India and Shri lanka के सम्बन्ध अच्छे रहे है।

Shri lanka के उ० भाग में तमिल तथा द० भाग में सिंहली जाति के लोग रहते है
यह देश 1948 में स्वतंत्र हुआ।

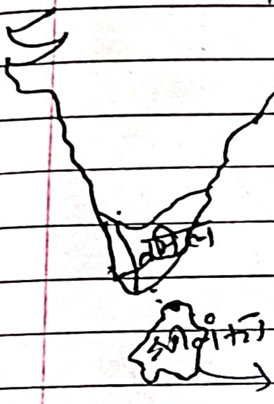

यहाँ रह रहे तमिल लोगो को यहाँ की नागरिकता नहीं दी गई और सिंहली जाति के द्वारा इन लोगो को यहाँ से बाहर निकाला जाने लगा तथा अत्याचार किए जाने लगे।

सीलोन प्राचीननाम

→ सिंहलवासियों ने राष्ट्रभाषा सिंहली बना दी।

→ 1972 में सिंहली ने देश का नाम बदलकर श्रीलंका कर दिया और बौद्ध धर्म को देश का प्राथमिक धर्म बना दिया
धीरे -2 जातिय जातीय तनाव बढता गया। 1976 में वेलुपिल्लई प्रभाकरन के नेतृत्व में LTTE (Liberation Tigers of Tamil Eelam) का गठन किया और इसने उ० व पू० श्रीलंका में एक तमिल मातृभूमि के लिए अभियान शुरु किया

NOTE - LTTE को India ने 1992 में एक आतंकवादी संगठन घोषित किया
21 मई, 1991 में Rajiv Gandhi की हत्या का जिम्मेदार LTTE को माना
18 मई 2009 को लिट्टे नेता प्रभाकरन को मार दिया तथा इस संगठन को समाप्त कर दिया

भारत ने विभिन्न उग्रवादी समूहों को निरस्त करने के लिए ऑपरेशन पवन के तहत Shri lanka में भारतीय शान्ति सेना (IPKF) को तैनात किया बढ़ती हिंसा के बीच 3 Year बाद IPKF को बाद में वापस बुला लिया गया।

रहमद अली
पाकिस्तान (पश्चिम स्थान)

भारत - पाकिस्तान सम्बन्ध :-

एशिया महाद्वीप में ब्रिटिश उपनिवेश की समाप्ति के साथ ही एक नवीन संघर्ष का उदय हुआ अर्थात् भारत राज्य से दो नवीन राज्यों का निर्माण हुआ जिनमें एक भारत और दूसरा पाकिस्तान बना।

→ भारत-पाक॰ का विभाजन उस सदी की महत्वपूर्ण घटना थी। यह विभाजन धर्म के आधार पर हुआ। हिन्दू धर्म हिन्दुस्तान और मुस्लिम धर्म पाकिस्तान बन गया।

→ भारत-पाक॰ के संबंधों को हम किसी भी समयकाल में देखें वहाँ हमें सौहार्द की बजाय दुश्मनी ही देखने को मिलेगी अर्थात् पाक॰ को हम भारत का प्राकृतिक शत्रु कह सकते हैं।

भारत-पाक॰ संबंधों को निम्न रूप से समझ सकते हैं -

(A) विभाजन से उत्पन्न समस्याएँ :-
- → हैदराबाद समस्या
- → जूनागढ़ समस्या
- → J&K समस्या

(B) युद्ध :-
- → 1947
- → 1965
- → 1971
- → 1999

(C) प्रमुख विवाद :-

(a) → नदी जल विवाद → (सिंधु, झेलम परियोजना)
- → तुलबुल
- → भाखलियार बाँध

(b) → भूमि विवाद
- → कच्छ का रण
- → J&K
- → LOC का निर्धारण
- → सियाचिन ग्लेशियर

(D) आतंकवादी समस्या
- → 2002 संसद
- → 26/11 मुम्बई
- → उरी
- → पुलवामा
- → हैदराबाद Bomb

आंतकी संगठन

PAK - 13 देशीरियासत
India - 552

विभाजन से सम्बन्धित समस्याएं :-

हैदराबाद :-

1947 में हैदराबाद रियासत एक प्रमुख रियासत थी जिसका विलय अभी नहीं हुआ था। इसके शासक का नाम निजाम था और यह पाक॰ में शामिल होना चाहता था, परन्तु धरातलीय स्वरूप के कारण यह सम्भव नहीं था। इसी समय हैदराबाद में माओवादियों द्वारा कृषि आन्दोलन किया जाता है।

इसी आन्दोलन को समाप्त करने के लिए अपनी सेना को भेजा और सेना जनता पर अत्याचार करती जिससे स्थिति और अधिक बिगड़ जाती है और मजबूरन सरदार वल्लभ भाई पटेल के नेतृत्व में एक सैनिक कार्यवाही की जाती है जिसका कूटनीतिक नाम 'ऑपरेशन पोलो' था।

इसके बाद हैदराबाद रियासत का विलय भारत में हो गया।

जूनागढ़ समस्या :-

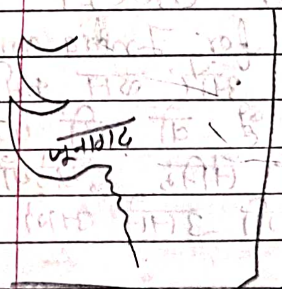

गुजरात के द.-प. में स्थित एक रियासत, जो 15 Aug. 1947 तक भारत में शामिल नहीं हुई थी, की अधिकतर जनसंख्या हिन्दू एवं राजा मुस्लिम था।

जूनागढ़ का राजा (नवाब) मुहम्मद महाबत खानजी ने पाक॰ में शामिल होने का फैसला किया। यहाँ की जनता भारत में रहना चाहती थी

अतः भारत सरकार ने यहाँ पर 'जनमत संग्रह' द्वारा सन् 1948 में सर्वसम्मति से जूनागढ़ का

विलय भारत में करवाया।

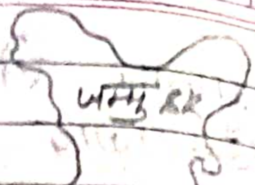

जम्मू कश्मीर समस्या :-
भारत में (1947 में) विलय न होने वाली एक यह भी रियासत थी। यह रियासत एक स्वतंत्र देश के रूप में रहना चाहती थी।
यहाँ का राजा हरिसिंह हिन्दू तथा जनता मुस्लिम थी।

→ सन् 1947 में पाक. के कबालियों ने (आदिवासी + पाक. सैनिक) कश्मीर पर आक्रमण कर दिया [नेतृत्वकर्ता → अकबर खान]

* 1932 में J&K में नेशनल कॉन्फ्रेन्स (मुस्लिम कॉन्फ्रेन्स) शेख अब्दुल्ला द्वारा गठन किया गया।

1948 में नेहरू जी ने J&K का मुद्दा UNO में पेश कर दिया जो एक गलती साबित हुई। UNO ने एक कमीशन बनाया UNCIP (United nations Commission for India and Pakistan) का गठन किया और इस कमीशन ने कहा कि जो जहाँ तक है वो वहीं पर रहेगा अर्थात् दोनों देशों की सैनिक टुकड़ियाँ जहाँ है वो वहीं पर रहेगी उससे आगे नहीं आयेगी।

UNCIP ने तीन योजनाएँ बनाई
- → 1950 → (2)
  - मैक नॉटन प्रस्ताव → जनमत स
  - ओवन डिक्सन आयोग → सिल
- → 1951 → (1) → ग्राम आयोग।
  - ↳ मध्यस्थता।
  - ↳ शांति + सुरक्षा जितनी ही

1951 में J&K के लिए संविधान सभा का गठन किया गया।
1954 में भारत सरकार द्वारा J&K की पुष्टि की गई
26 Nov. 1957 में J&K में संविधान लागू किया

दिल्ली एग्रीमेंट 1952

NOTE :-

अनु. 370 :- J&K को विशेष दर्जा दिया गया

14 मई 1954

35 A :- कश्मीर की संस्कृति को कायम रखेगे यहाँ का कानून अलग रहेगा और झण्डा भी विशेष रूप से अलग ही रहेगा और अन्य भारतीय व्यक्ति वहाँ की सम्पत्ति (जमीन) को खरीद नहीं सकते।

वर्तमान समय में J&K की स्थिती :-

→ J&K के संविधान के अनु. 370 के अनुसार जो स्वायत्तता प्राप्त है वो 2019, Aug. को समाप्त कर दी गई

→ J&K के लोगों को दोहरी नागरिकता प्राप्त थी अब उसे एकहरी कर दिया गया

→ पहले भारतीय संसद J&K की राज्य सूची सम्बन्धी कानून नहीं बना सकती थी परन्तु उसे समाप्त कर दिया गया।

→ आपातकाल लागू नहीं कर सकते थे अब ऐसा नहीं रहा।

→ J&K को दो केन्द्र शासित प्रदेश बना दिया गया (i) जम्मू (ii) लद्दाख

SOFT BRAIN WASH

Most helped country → capitalist
↓
- USA
- Russia etc.

India पक्ष	POK पक्ष	स्वतंत्र पक्ष
भ्रष्ट राजनेताओं का होना जिससे देश का विकास न होना	भ्रष्ट राजनेताओं का होना व जनता को और विशेष मुद्दे से जनता को अलग रखना	भ्रष्ट राजनेताओं द्वारा अपना स्वार्थ सिद्ध करना
आर्थिक सहायता मिलने पर देश का हित न करके सुरक्षा पर अधिक ध्यान रखना	आर्थिक सहायता मिलने पर हथियारों पर अधिक ध्यान देना	आर्थिक सहायता मिलने पर हथियारों व शत्रु के लिए दमनकारी नीतियों के निर्माण में व्यय कर
नेताओं के द्वारा भाषणों से जनता का ध्यान अपनी ओर कर जनता की समस्याओं से दूर ले जाना, नौजवानों व युवा पीढ़ी को गलत राह की ओर धकेलना	नेताओं के द्वारा युवाओं को क्रांतिकारी बनाकर उनसे गलत काम करवाना	नेताओं व अफसरों द्वारा युवाओं को गलत ट्रैक पर ले जाना व उनको धोखे में रखना

(B) युद्ध :-

(i) 1947 - Indo-Pakistani War
(ii) 1965 -
(iii) 1971 -
(iv) 1999 → कारगिल युद्ध

(i) 1947 - Indo-Pak. War :→
→ कबालियो द्वारा J&K पर आक्रमण
↳ साथ ही पाक. सैनिक भी थे
उन्होंने जनता पर अनेक अत्याचार किया और
मारा गया। ऐसा देख राजा हरिसिंह ने
help मांगी → Nehru से
↳ Indian Army भेजी
भारत winner रहा (victory)
J&K का विलय India में हो गया

(ii) 1965 का युद्ध :- कच्छ का रण   operation Blue Star
↳ India की आर्थिक स्थिति कमजोर
Because 1962 में India + China war हुआ था
जिसमे India की हार हुई
↳ फायदा PAK ने उठाया
और 1965 में आक्रमण
कर दिया But PAK
की हार हुई

PAK - Operation Gibraltar
- operation Grand Slam

कच्छ का area रेगिस्तान था यहां नमक व दलदलीय क्षेत्र है

कच्छ

पाक कच्छ के रण को अपने में विलय
करना चाहता था। पाक ने यहां सड़क का निर्माण
कर पुलिस चौकियों का निर्माण कर दिया

Page No
Date

युद्ध की समाप्ती -

4 Sep. 1965 को सुरक्षा परिषद ने प्रस्ताव पास किया कि दोनों देश युद्ध को विराम करे
22 Sep. 1965 को युद्ध End

* ताशकन्द समझौता :-

PAK 'S President (राष्ट्रपति) अय्यूब खां
India 'S ~~President~~ Prime Minister - LBS
समझौता → ताशकन्द में
सम्मेलन आरम्भ → 4 Jan 1966
- USSR के नेतृत्व में
10 Jan 1966 में दोनों देशो ने 'ताशकन्द समझौते' पर ह. किये।

(iii) 1971 का War (3 Dec - 16 Dec)
India + PAK युद्ध
पूर्वी पाक + प. पाक से सम्बन्धित
प. पाक ने भारत को कहा कि आन्तरिक मामलो में हस्तक्षेप ना करे पर पू. पाक जनता प. पाक से परेशान थी। India ने आन्तरिक मामलो मे हस्तक्षेप नहीं किया
पू. पाक. के लोग प. पाक के अत्याचारो से पीडित होकर India में शरणार्थी के रूप में आने लगे गए
~~India ने~~ पूर्वी पाक. व प. पाक में विरोध, का कारण यह रहा कि प. पाक के याहियाखान ने सत्ता प्राप्त करने के लिए चुनाव करवाया लेकिन वह हार गया और पूर्वी पाक. जीत गया यह देख वह चुनाव को रद्द कर दिया जिससे पूर्वी पाक में आक्रोश फैला।

याहियाखां सत्ता

इन्दिरा गाँधी PM

प. PAK ने USA के साथ मिलकर
भारत ने अपनी Army पूर्वी PAK में भेजी
और प. PAK ने USA के साथ मिलकर India + पू. पाक पर आक्रमण करने की योजना बनाई
India की help USSR कर रहा था
यह देख USA ने अपने युद्ध पोतों को पुनः वहाँ से अपनी ओर बुला लिया तथा Indian Army ने ढाका को चारों ओर से घेर लिया और PAK ने आत्मसमर्पण कर दिया
इसी के साथ विश्व में एक नये देश का उदय हुआ → बांग्लादेश

* 16 Dec. 1971 में ढाका में सैनिक सम्मेलन (समारोह) में जनरल नियाजी ने भारत के लेफ्टिनेंट जनरल जगतसिंह अरोरा के सम्मुख आत्मसमर्पण किया

पाक. जनरल याहिया को सत्ता छोड़नी पड़ी और उनके स्थान पर सत्ता जुल्फिकार अली भुट्टो के साथ आ गई।
भुट्टो + इन्दिरा गाँधी → पत्रव्यवहार
28 June 1972 को शिमला समझौता
↳ लक्ष्य दोनों के बीच शांति स्थापित करना

(iii) 1999 - कारगिल का युद्ध :-

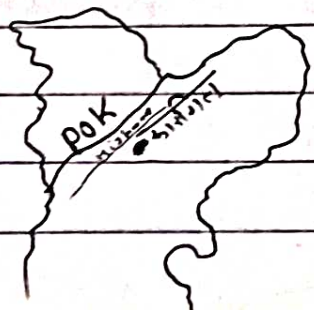

PAK के 1999 में जैसे ही Indian Army कारगिल क्षेत्र से पीछे की और हटी ही थी कि PAK के

सैनिकों ने उस क्षेत्र पर युद्ध करने के लिए चढ़ाई Start कर दी

यह Plan जावेद हसन का था
जबकि दोनों देशों की सेना सर्दियाँ Start होते ही कारगिल क्षेत्र या पहाड़ी क्षेत्र को छोड़कर नीचे चली जाती थी लेकिन PAK की सेना को कहा गया कि जैसे ही Indian Army नीचे चले जाए तो तुम सभी कारगिल पर चढ़ाई कर देना और उसे हम अपने कब्जे में कर लेंगे

कारगिल में 4 जगहों पर घुसपैठ हुई
↳ मसकोह, द्रास, काकसर, बटालिक
(द्रास → Most)

ताशि नामग्याल नामक एक व्यक्ति ने देखा की कुछ लोग कारगिल की ओर आ रहे है यह सूचना Army को दे दी
5 May को इसकी जाँच की → Indian Army
9 May को आक्रमण Start (गोला गिराया)
13 May को दोनों ओर से Start हुआ

26 May को ऑपरेशन सफेद सागर चलाया

(2) सीमा प्रमुख विवाद :-

(i) भूमि विवाद :-
→ कच्छ का रण 1965
→ J&K - 1947
→ LOC का निर्धारण
→ सियाचिन ग्लेशियर

सियाचिन ग्लेशियर :-

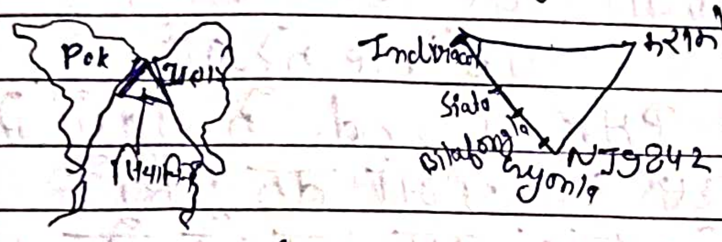

1984
Operation मेघदूत

पाक. सैनिकों ने सियाचिन पर आक्रमण किया इस आक्रमण के लिए India ने
code 'operation मेघदूत' का plan किया।
India से ब्रिगेडियर चन्ना और नरेन्द्र बुल्क (जनरल) इस युद्ध का नेतृत्व किया

LOC का निर्धारण :-
Line of Control
UNO द्वारा J&K war के बाद घोषित वर्ष 1948 की संघर्ष विराम रेखा ही बाद में नियंत्रण रेखा के रूप में सामने आई।
दोनों देशों के बीच 1972 में शिमला समझौते के बाद इसे LOC के रूप में नामित किया

*

सिंधु जल विवाद :-

1960 में Ind. + PAK में नदी को लेकर विवाद

↳ सिंधु जल समझौता 19 Sept. 1960
- ↳ Nehru + PAK के राष्ट्रपति अयूब खान
- ↳ पूर्वी नदियों (व्यास, रावी, सतलज) भारत उपयोग करेगा
- ↳ प. नदियाँ (सिंधु चिनाब झेलम) पाक use करेगा

1960 के बाद PAK व Ind. के संबंधों में तनाव पैदा हुए जो अभी तक जारी है
Ind. कभी भी सिंधु नदी जल को रोक सकता है (PAK में न जाने के लिए)

बगलिहार बाँध परियोजना।

J&K में (डोडा जिला) चिनाब नदी पर बनाई गई परियोजना है।
इसकी कल्पना 1992 में, 1996 में स्वीकृति, निर्माण 19
पाक० ने आपत्ति जताई है। इसका कहना है कि इस बाँध से Ind. ने सिंधु नदी समझौता का उल्लंघन किया है और इससे जल प्रवाह को कम कर लिया गया।

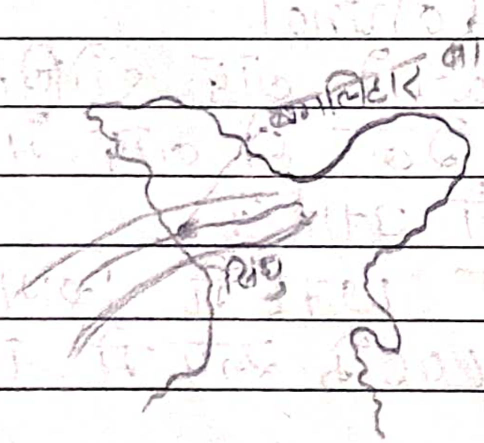

आतंकी समस्या

(i) मुम्बई पर आतंकी हमला :- 2008
26/11

पाक की एक इस्लामी आतंकवादी संगठन लश्कर-ए-तैयबा के मुम्बई के ताज होटल पर 10 आतंकवादियों ने हमला कर दिया।
इस समय मुम्बई में चार दिन आतंकी हमले हुए लियोपोल्ड कैफे, छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनल, ताज महल पैलेस होटल, ओबेराय ट्राइडेंट, कामा अस्पताल, नरीमन हाउस

26 Nov. 2008 से 29 Nov. 2008 तक

(ii) पठानकोट पर हमला :
पंजाब 2 Jan - 5 Jan 2016

(iii) उरी 2016 18 September
PAK के चार जैश-ए-मोहम्मद के आतंकवादियों ने कश्मीर में उरी शहर पर हमला कर दिया
यह हमला भारतीय सेना ब्रिगेड मुख्यालय पर किया गया → 19 भारतीय सैनिक शहीद हुए

11 Day after उरी आतंकी हमले का जवाब India ने Surgical Strike से दिया

29 Sep. को भारतीय सैनिक POK में गए और Army ने तमाम आतंकी अड्डों को तबाह कर दिया

लेथपोरा इलाका

Black day in India

पुलवामा terror attack :-

14 Feb 2019 को जम्मू श्रीनगर NH पर भारतीय सुरक्षाकर्मियो को ले जाने वाले CRPF के वाहनों पर आतंकी हमला हुआ

45 Army शहीद

अपराधी → जैश -ए- मोहम्मद आतंकवादी समूह

26 Feb: बदला → 12 दिन बाद Ind. Army ने बालाकोट पर आक्रमण किया

Air strike से

↳ मिराज 2000 विमानो से + AWACS

आतंकी संगठन :-

PAK :-

(AQIS) अलकायदा इन द इंडिया सबकॉन्टिनेंट

(ISKP+IK) इस्लामिक स्टेट खुरासन प्रोविंस

अफगान तालिबान

तहरीक-ए- तालिबान पाकिस्तान

* लश्कर -ए -तैयबा

* जैश - ए - मोहम्मद

16/11/22

[Indo - China Relations]

पहले राजतंत्र

China में 1911 में क्रांति हुई

① च्यांग-काई-सेक (नेता) तानाशाही था

सान यात सैन China में Republic की ①
स्थापना की

② फिर माओ-त्से तुंग

किसानों के लिए

→ शोषण समाप्त किया China में

→ फारमोसा द्वीप (ताइवान वर्तमान) भाग गया

Long March 1933 - Red Army की स्थापना

1 oct 1949 क्रांति → साम्यवादी

(A) प्रमुख विवाद :-

① सीमा विवाद

→ अक्साई चीन
→ तवांग क्षेत्र
→ अरुणाचल प्रदेश
→ डोकलाम विवाद
→ तिब्बत समस्या

② नदी विवाद :-
पारलुंग सांगपो
बांध निर्माण

③ चाइना की नीतियाँ :-

BRI Project
One China Policy
Five finger Policy
Dreptand Trap Policy
स्ट्रींग of पर्ल Policy
Tring of Puls Policy मोतियोकीमाला

④ अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति

NSG सदस्यता
UNO की सदस्यता
South china Sea
Russia -PAK china

17/11/22

Ⓑ सहयोग के मुद्दे :-

→ पर्यावरण सम्बन्धी
→ आर्थिक व्यापार
→ बौद्ध धर्म
→ अमेरिका को नियंत्रण करने वाले
→ पंचशील समझौता

(A) विवाद

(i) अक्साई चिन

J&K का वह भाग जो China के पास है उस क्षेत्र को अक्साई चिन कहा जाता है।

(ii) तिब्बत समस्या :-

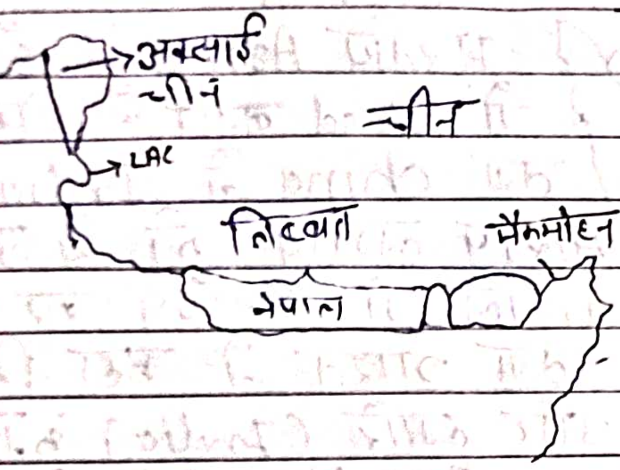

तिब्बत और नेपाल में कई बार युद्ध हुए उनके अत्याचारों से परेशान होकर तिब्बत ~~के~~ ने China से help ली।

तिब्बत ने ~~China~~ Nepal से छुटकारा पाया तो पाया लेकिन 1906-07 में China ने अपने अधिकार में ले लिया। 1912 में स्वतंत्र घोषित कर दिया

तिब्बत क्षेत्र एक बफ़र स्टेट था।

1950 में तिब्बत में China ने अत्याचार करना start कर दिया और यहाँ के दलाईलामा अपने क्षेत्र को छोड़कर भारत में आ गए

Imp ✱ तिब्बत क्षेत्र भारत और China के संबंध अच्छे रहे थे तब यह क्षेत्र India ने China को उपहार स्वरूप दे दिया गया।

वर्तमान समय में China तिब्बत में हान वंश को बसा रहा है ताकि वहाँ पर पहले से रह रहे लोगो की संख्या कम हो जाए।

डोकलाम विवाद :-

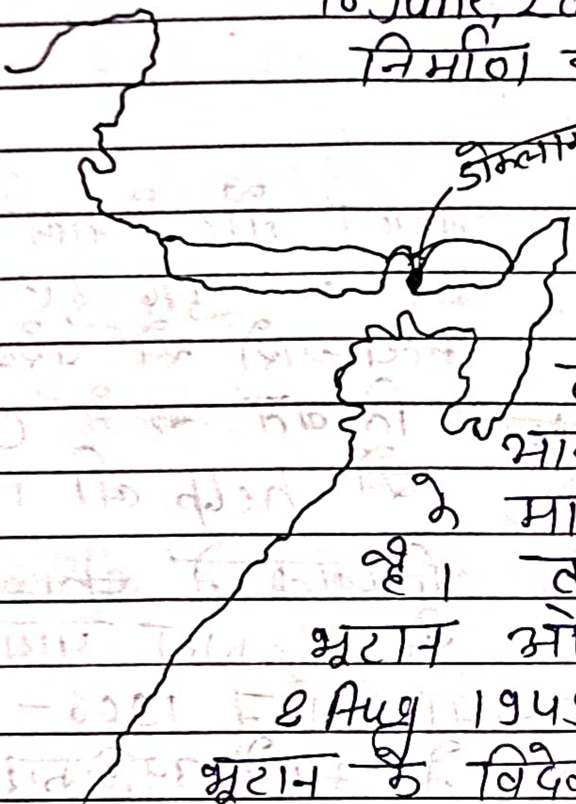

16 June, 2017 में डोकलाम में सड़क निर्माण को लेकर India and China में विवाद शुरू हो गया

भारतीय Army ने डोकलाम में Road बनाने से रोक दिया तब China ने India पर आरोप लगाया की वे उस के मामलों में हस्तक्षेप कर रहा है। तब भारत ने कहा कि भूटान और हमारे (India) के साथ 8 Aug 1949 को संधि हुई थी कि भूटान के विदेशी मामले और सुरक्षा India करेगा तो china ने इसे पुरानी संधि बताया लेकिन India ने 2007 में इस संधि को Renew करवाया और दोनों में घनिष्ठ मैत्री संबंध स्थापित हुए

अरुणाचल प्रदेश को लेकर विवाद

AP और China के मध्य सीमा रेखा को मैकमोहन रेखा कहा जाता है

China AP को द. तिब्बत का हिस्सा बताता है।

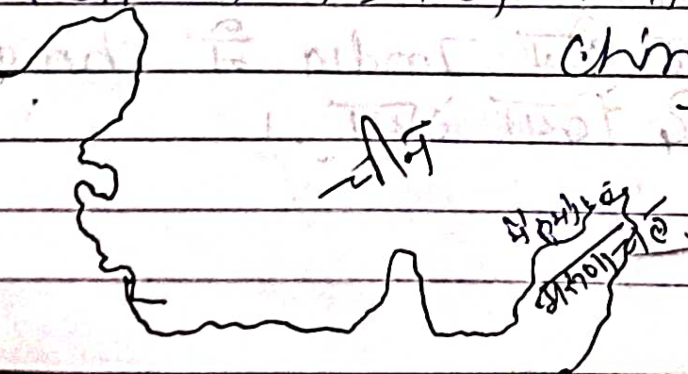

NEFA कहा जाता था → नॉर्थ ईस्ट फ्रन्टियर एजेंसी

तवांग क्षेत्र विवाद (अरुणाचल) :-

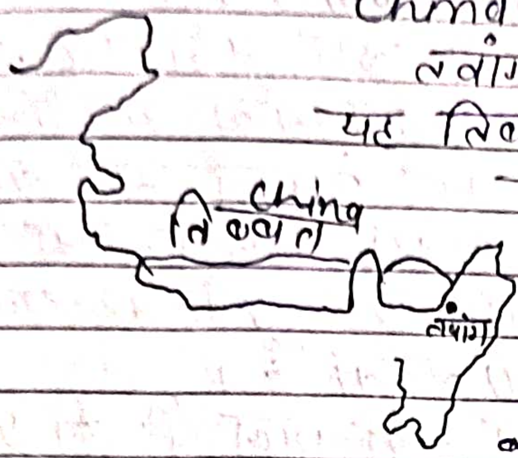

China अरुणाचल प्रदेश के क्षेत्र तवांग को लेकर दावा करता है कि यह तिब्बत का हिस्सा है।

यहाँ पर बौद्ध धर्म पाया जाता है तिब्बत में बौद्ध धर्म अधिक प्रचलित है।

तवांग क्षेत्र में भारत का विशाल बौद्ध मठ है।

1914 में समझौते के दौरान तवांग क्षेत्र को AP का हिस्सा बताया गया लेकिन इस क्षेत्र को लेकर China ने 1962 में युद्ध start कर दिया लेकिन युद्धविराम के तहत उसे अपना कब्जा छोड़ना पड़ा था।

अच्छा सम्बन्ध

सिक्किम (नाथुला) विवाद :-

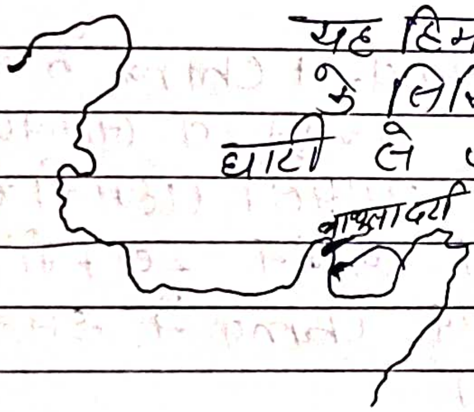

यह हिमालय की पहाड़ी दर्रा है जो भारत के सिक्किम राज्य को तिब्बत में चुम्बी घाटी से जोड़ती है। 1962 में war के बाद उसे बन्द कर दिया गया था 2006 में व्यापार के उद्देश्य से पुनः खोल दिया गया।

Ind ←70% व्यापार→ China

LAC लाइन of ऐक्चुअल कंट्रोल

Page No.

Date

② नदी विवाद :

(i) ब्रह्मपुत्र (यारलुंग सांगपो) विवाद

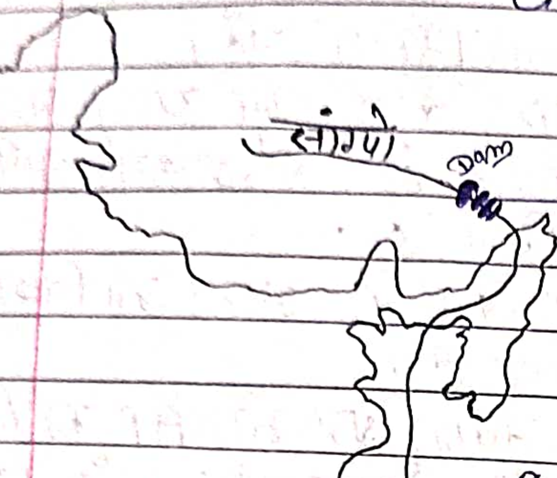

China ने इस नदी पर बड़े-2 बांधों का निर्माण कर लिया है जिस से अकाल या बाढ़ आने का खतरा हमेशा बना रहता है इससे डर पूर्वोत्तर राज्यों को बना रहता है।

इस नदी जल से ही पूर्वोत्तर राज्य कृषि करते हैं तथा असम में कांजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान व अभ्यारण्य इस नदी जल पर ही यहाँ के जीव-जन्तु निर्भर रहते हैं और China के बांध से पानी आपूर्ति प्रभावित होगी।

बाँध निर्माण विवाद

2008 में Ind. + China के मध्य समझौता हुआ था कि ब्रह्मपुत्र व सतलज नदी का जल का बहाव आपसी सहमती से ही उपयोग किया जाएगा लेकिन 2017 में डोकलाम विवाद के बाद China ने इस समझौते को नहीं माना

China ने यारलुंग त्संगपो (सांगपो) नदी पर गुरुत्वाकर्षण बांध परियोजना जांगमू बांध बना लिया जिससे भारत के पूर्वोत्तर राज्यों में अकाल या बाढ़ की स्थिति बन जाएगी।

③ चाइना की नीतियाँ :-

(i) 'One china' Policy :-

1949 में माओत्से तुंग के नेतृत्व में कम्युनिस्टो ने चियांग काई शेक के नेतृत्व वाली कॉमिंगतांग पार्टी के खिलाफ विद्रोह कर दिया।

जिससे China में गृहयुद्ध start हो गया

माओत्से तुंग China से भागकर फारमोसा द्वीप पर चला गया और वहाँ पर उसने लोकतंत्र (गणतंत्र) स्थापित कर दिया।

अब इस द्वीप का नाम ताइवान है जो स्वतंत्र देश है पर China इसको अपना हिस्सा मानता है।

ताइवान पहले China था इसी को UNO में veto Power थी लेकिन जनवादी चीन ने veto Power इससे छिन कर स्वयं ले लिया और स्वयं को China कहने लगा

हांगकांग को भी ताइवान की तरह ही China अपना हिस्सा मानता है।

Five Finger Policy :- यह चीन की एक विदेश नीति है। उनका मानना है कि तिब्बत दाहिनी हाथ है और लद्दाख, नेपाल, सिक्किम, भूटान व अरुणाचल प्रदेश उसकी पाँच उंगलियाँ है और इन क्षेत्रों को 'मुक्त करना' China का कर्तव्य है।

2013 मे name रखा
OBOR को change करके

→ BRI Project

Belt and Road Initiative

↳ इसे पहले OBOR (one belt one road) project के नाम से जाना जाता था।

उद्देश्य - आर्थिक विकास व अन्तरक्षेत्रिय सम्पर्क को बढ़ावा देना

यह Project प्रमुख रूप से प्राचीन समय में Silk Road थी उस को पुनः स्थापित करने का प्रयास China कर रहा है।

यह योजना राष्ट्रपति (china) शी जिनपिंग ने बनाई।

पूर्व से प० तक चीन सड़क और समुद्र रास्ते से एक ऐसा जाल बिछाने जा रहा है जिससे कि वो पूरी दुनिया पर अपनी धाक जमा पाए।

इस Project से चीन एशियाई देशो, अफ्रीकी व यूरोपिय देशों के बीच कनेक्टिविटी व सहयोग में सुधार करना चाहता है।

China ने PAK के साथ मिलकर PAK मे CPEC (China-PAK Economic Corridor) का निर्माण कर रहा है.. यह सड़क (गलियारा) J&K से (POK) होकर जा रहा है जबकि इस क्षेत्र का अभी निश्चित नहीं हुआ है कि यह हिस्सा Ind. में रहेगा या PAK मे इस कारण Ind. इस गलियारे को बनने नहीं दे रहा तथा CPEC से भारत की सुरक्षा खतरे में भी आ सकती है क्योंकि China India को पूरी ओर से घेर लेगा और समीप आ जाने से कभी भी आक्रमण कर सकता है।

यह मुख्य रूप से 78 देशों में फैला है।
इस Project में दो भागों को शामिल किया
→ Silk Road Eco. Belt → स्थलीय क्षेत्र
→ 21वी सदी का समुद्री रेशम मार्ग → समुद्री

CPEC Project के अनुसार China PAK में सड़क + गैस पाइपलाइन + रेलवे लाइन निर्माण करने का Plan बना रहा है। इसे पाक. के बलुचिस्तान क्षेत्र में ग्वादर बन्दरगाह तक बनाया जा रहा है।

OBOR – CPEC पर भारत की आपत्तियाँ :
- भारत ने OBOR का समर्थन नहीं किया
- इस Project से भारत को चारो ओर से घेर लेने का प्रयास किया जा रहा है।

China ग्वादर बन्दरगाह से मध्य पूर्व व अफ्रीका तक पहुँचने के मार्ग प्रशस्त कर रहा है जिससे China को Hind Ocean तक पहुँचने में मदद मिल जाएगी

मोतियो की माला

China's String of Pearls Policy :-

China इस Policy के द्वारा कई देशों में वाणिज्यिक और सैन्य ठिकानों और बन्दरगाहों के नेटवर्क का निर्माण करके रहा है जैसे PAK के ग्वादर बन्दरगाह

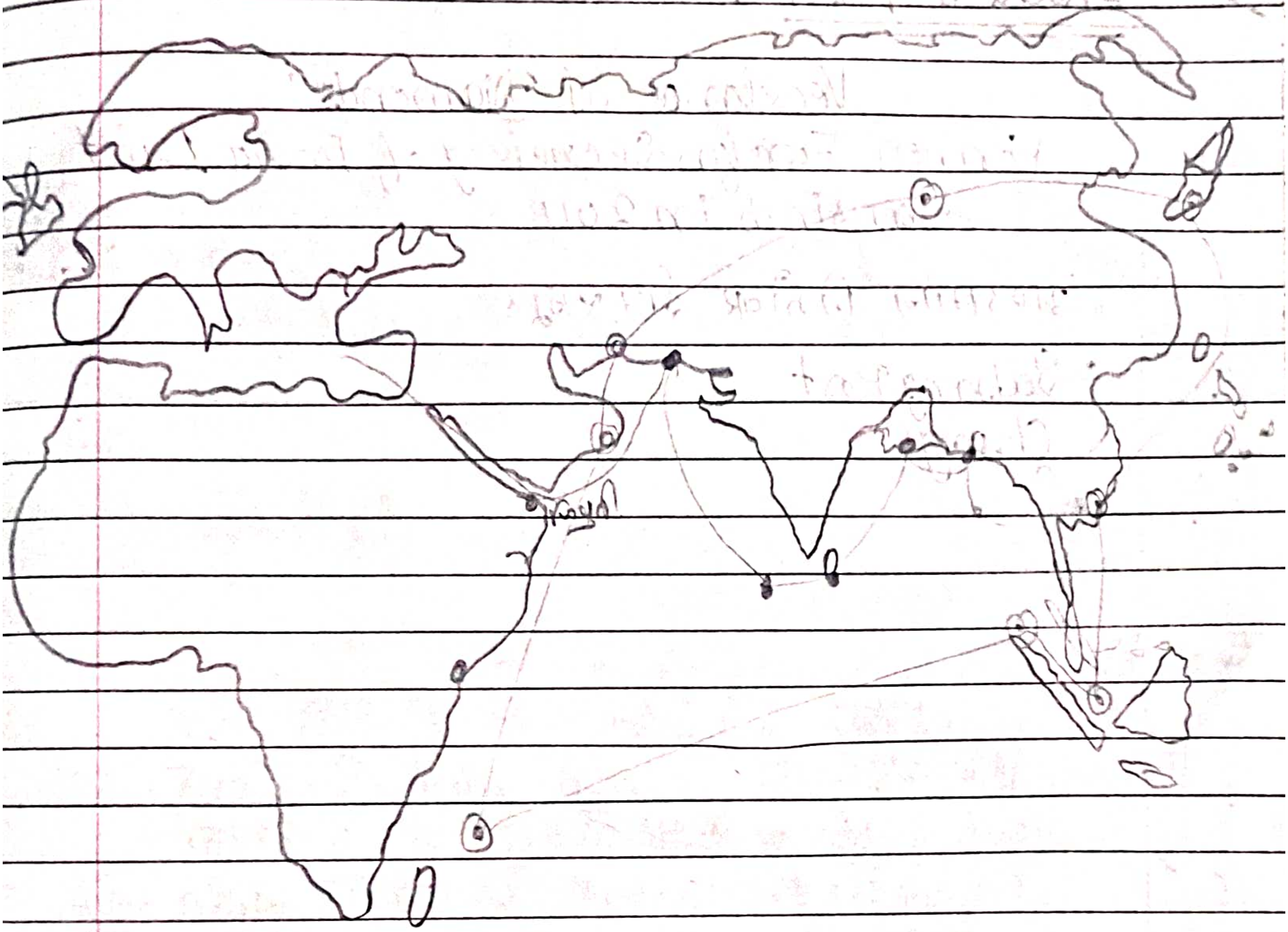

China भारत को पूर्ण रूप से चारो ओर से घेर लिया है इस घेरे को मोतियों की माला अर्थात String of Pearls कहते है। इस Policy के अन्तर्गत PAK का ग्वादर बन्दरगाह, श्रीलंका का हम्बनटोटा बन्दरगाह तथा म्यांमार का क्याउकप्यु बन्दरगाह, अफ्रीका में जिबुती, मालदीव, बांग्लादेश, म्यांमार

केन्या का लामू बन्दरगाह, पैटागोनिया, अर्जेन्टीना, कोको द्वीप इन सभी स्थानों पर China ने अपने सैन्य अड्डे व नौसैन्य की स्थापना कर दी

most

India's Plan :-

'Necklance of Diamonds'

Former Foreign Secretary of India Lalit Mansingh in 2011

- अण्डमान निकोबार द्वीप समूह
- Sabang Port
  Changi

Debt-trap policy :-

China की एक विदेश नीति है कि – 'गाजर व छड़ी की' (carrot and stick policy)

इस Policy के अनुसार China देशों को Loan देता है अगर वापस उसे जो देश चुका नहीं पाता है तो उसके किसी क्षेत्र पर अपना अधिकार 99 वर्षों तक बना लेता है।

श्रीलंका के हम्बनटोटा बन्दरगाह पर अपना अधिकार जमाए हुए है उसी प्रकार अन्य देशों के बन्दरगाह भी शामिल है

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति :-

(i) NSG की सदस्यता

Nuclear Suppliers Group 1974 में

इस नीति के तहत एक देश द्वारा दूसरे देश को युद्ध की सामग्री भेजी या उपलब्ध करवाई जाती है। नियंत्रित की जाती है

NSG का सदस्य China भी है।

इस Group के member वो देश है जो NPT व CTBT नामक प्रस्तावों पर ह० किए हुए है. जबकि भारत ने इन दोनों प्रस्तावों पर ह० नहीं किया है।

UNO की सदस्यता :
China को UNO में Permanent member बनाया गया है। China के पास Veto Power है।

Russia + PAK + China :-
शत्रु का शत्रु → दोस्त

मित्र
- Russia ↔ USA
- China ↔ USA
- India → PAK + China
  - मित्र → USA

South China Sea :-
China, South China Sea पर अपना दावा बताता है।
इस Sea पर ताइवान, फिलीपींस, ब्रुनेई, मलेशिया, वियतनाम का भी हिस्सा है। पर China सम्पूर्ण sea पर ही अपना दावा किया रहा है।
→ इस क्षेत्र में प्राकृतिक तेल, खनिज व गैस के भंडार है।
China ने South China Sea में 9 डैश लाइन का काल्पनिक निर्माण करके द. चीन सागर पर अपना कब्जा जमा लिया।

South China Sea खनिज (पेट्रोलियम व गैस) संसाधनों में महत्वपूर्ण होने के साथ व्यापार में भी प्रसिद्ध है। यहाँ पर China ने कृत्रिम द्वीप स्पार्टल व पार्सल बनाया और Sea पर अपना अधिकार बताने लग गया आसियान ऑब्जर्वर राष्ट्र यहाँ पर खनिज प्राप्त करते थे लेकिन China ने उन की मशीनों, जहाजों को नष्ट करने लग गया उन आसियान देशों ने भारत से help ली और भारत ने INS विक्रांत को भेज दिया गया China INS विक्रांत को देखकर घबरा गया

Question:- भारत - अमेरिका के सम्बन्धों को समझाइए इण्डो Pacific क्षेत्र में Quad के महत्व को समझाइए।

भारत व अमेरिका संसार के सबसे बड़े लोकतांत्रिक राज्य है। भारत व अमेरिका के सम्बंधो में लम्बा तनाव और लम्बा ही सहयोग रहा है अर्थात् दोनों के सम्बन्ध सौहार्दपूर्ण एवं विवादस्त रहे हैं।

अमेरिका एक महाशक्ति है, जो सम्पूर्ण विश्व को नियंत्रित करने का कार्य करती है अर्थात् अमेरिका ने एक वैश्विक व्यवस्था का निर्माण किया है
[आर्थिक → INF, WTO, World Bank
राजनीति → G20, G7, UNO]

भारत अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में अपनी स्थिति को कायम करने के लिए विभिन्न तरह की रणनीतियाँ अपनाता रहा है।

1947 में जब भारत स्वतंत्र हुआ उस समय शीत युद्ध कायम था और सम्पूर्ण विश्व दो ध्रुवों में बँट चुका था पहला पूंजीपति ध्रुव व दूसरा साम्यवादी ध्रुव था।

1991 सोवियत संघ के विघटन के बाद भारत ने अमेरिका से परस्पर सम्बन्ध बनाने की नीति अपनाई।